प्र० : क्या अण्डा सांस लेता है ?

जगदीश प्रसाद शर्मा—कानपुर

उ० : बहुत से लोगों को यह न मालूम [illegible] कि अंडा भी जीवित व निर्जीव होता [illegible] की सफेदी के ऊपर यदि वार्निश कर [illegible] जाए तो अंडा मर जाता है क्योंकि वार्निश के कारण वायु, अंडे के भीतर नहीं जा पाती। इस प्रकार अंडे के मर जाने पर, उसमें से चूजे भी पैदा नहीं हो सकते।

इसी प्रकार बीज भी पृथ्वी के भीतर ही सांस लेते हैं। यदि बीज पृथ्वी में अधिक गहराई में बो दिये जाएं तो वे मर जाते हैं और उनमें से अंकुर नहीं निकलते। जिस प्रकार जल में वायु मिली हुई है उसी प्रकार पृथ्वी में वायु पायी जाती है।

प्र० : मछलियाँ पृथ्वी पर जीवित क्यों नहीं रह सकतीं ?

सीताराम शर्मा—बुलन्दशहर

उ० : इसका सीधा-सादा उत्तर जो लोग देते हैं वह यह कि मछली को पृथ्वी पर पानी नहीं मिलता। यदि मछली को उबाले हुए पानी में डाल दें तो वह इस पानी में भी मर जाएगी क्योंकि उबले हुए पानी में वायु का अभाव होता है। इससे यह पता चलता है कि मछली बिना वायु के जीवित नहीं रह सकती। परन्तु जब वह पृथ्वी पर रख दी जाती है, जहां वायु का बाहुल्य होता है तो वह मर [illegible] जाती हैं ? यह एक विचारणीय प्रश्न [illegible] इसका एकमात्र कारण यह है कि वह पृ[illegible] की वायु को खींचने में असमर्थ होती है[illegible]कि मछलियों के फेफड़े नहीं होते। फेफड़े के बिना वह वायु का किसी प्रकार लाभ नहीं उठा सकती। मछलियों के केवल गलफड़े (Gills) होते हैं जिनकी सहायता से वे जल मिश्रित वायु को खींच पाती हैं। इसके विपरीत दशा मनुष्यों की है, वे पानी में सांस नहीं ले सकते क्योंकि उनके गलफड़े नहीं होते। यदि कोई ऐसा जीव हो जिसके फेफड़े और गलफड़े दोनों हों तो वह पृथ्वी व पानी में जीवित रह सकता।

प्र० : पतंग क्यों उड़ती है ?

हरिओम—बहराइच

उ० : पतंग बिना पंख के ही वायु में उड़ती रहती है। कारण यह है कि वायु इसे आकाश में संभाले रहती है। यदि पतंग के कागज को मोड़कर गोली बना दें और वायु में फेंकें तो वह अन्य वस्तुओं की भांति पृथ्वी के आकर्षण से पृथ्वी पर गिर पड़ेगा। गुब्बारा आकाश में तभी उड़ता है जब उसमें वायु से हल्की गैस भरी होती है। पतंग में किसी प्रकार की गैस न होने पर भी यह वायु में इधर-उधर ऊपर-नीचे उड़ती है। इसका रहस्य यही है कि पतंग चौड़ी होती है। इसलिए वायु का एक बड़ा भाग इसे संभाले रहता है।

प्र० : तालाब में पत्थर फेंकने से उसमें लहरें उत्पन्न क्यों होती हैं ?

सुशील कुमार—जहांगीराबाद

उ० : प्रकृति का यह नियम है कि जब कोई वस्तु स्थिर है तो वह स्थिर बनी रहेगी जब तक कि कोई उसे छेड़े न, और जब कोई वस्तु गतिमान हो जाती है तो वह चलती ही रहती है जब तक कि कोई उसे रोक न ले। यही नियम उस पत्थर के लिए है जिसे तालाब में फेंका जाता है और उन लहरों के लिए भी है जो पत्थर फेंकने के कारण बनती हैं। ध्वनि एवं प्रकाश पैदा करने से ध्वनि एवं प्रकाश-तरंगें उत्पन्न होती हैं जो सभी दिशाओं में फैलती हैं और निरंतर बढ़ती जाती हैं जब तक कि उनके मार्ग में किसी प्रकार की बाधा न हो। पानी की लहरें भी एक के बाद एक उत्पन्न होती रहती हैं, परन्तु किनारे पर आते-आते वे आपस के घर्षण के कारण रुक जाती हैं। ज्यों-ज्यों लहरें बड़ी और चौड़ी होती जाती हैं उतनी ही उनकी शक्ति किनारे तक पहुंचते-पहुंचते क्षीण हो जाती है।

प्र० : कुएं से पानी खींचते समय यदि रस्सी टूट जाये तो खींचने वाला क्यों गिर जाता है ?

राजीव कुमार शर्मा—मुरादाबाद

उ० : न्यूटन की गति के तीसरे नियम के अनुसार प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। कुएं से रस्सी द्वारा पानी खींचने पर, मनुष्य रस्सी को खींचता है और रस्सी में भार लटका रहने के कारण, उसी बल से रस्सी भी मनुष्य को खींचती है। रस्सी के टूट जाने पर मनुष्य पर खिचाव नहीं रह जाता और वह गिर पड़ता है।

प्र० : दाल में घी डालने पर, वह ऊपर क्यों तैरता है ?

हरिओम—रामपुर

उ० : वे द्रव, जिनका घनत्व जल के घनत्व से कम होता है। जल के ऊपर तैरते हैं। तेल, स्प्रिट आदि का घनत्व जल के घनत्व से कम होता है। इसीलिए ये जल के ऊपर तैरते हैं। दाल के पानी से घी का घनत्व कम होता है अतः दाल में घी डालने पर वह ऊपर तैरने लगता है।

प्र० : तम्बाकू क्यों और कितना हानिकारक है ?

अनिल कुमार—पटना

उ० : तम्बाकू में एक प्रकार का विष पाया जाता है जो निकोटीन कहलाता है। निकोटीन एक भारी तथा तैलीय पदार्थ है और तम्बाकू के पौधे से भभके द्वारा पृथक किया जा सकता है। धूम्रपान करते समय, सांस के साथ ही साथ धुआं हमारे फेफड़ों में पहुंच जाता है और निकोटीन मिश्रित धुएं से रक्त भी दूषित हो जाता है। पान में खाने से तम्बाकू का विष लार में मिलकर पेट में पहुंचता है जिससे अनेकों रोग हो जाते हैं।

एक पौंड तम्बाकू में लगभग ३८० ग्रेन निकोटीन पाया जाता है। इस विष के एक ग्रेन का $\frac{1}{10}$ भाग एक कुत्ते को तीन मिनट में निष्प्राण बनाने के लिए पर्याप्त है और मनुष्य आधे मिनट में मर सकता है। एक पौंड तम्बाकू से निकलने वाला विष लगभग ३०० मनुष्यों को मार सकता है। एक सिगार में इतना विष होता है कि वह दो मनुष्यों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

उलट

वात क्या है ? पान मुँह में डाल के तुम झट मुझे जप्पी डालने लगते हो ? कहीं तुम मेरे वालों से अपने हाथ तो नहीं साफ करते ?

सासु जी, अगर आपको अकेले बैठ कर खाना नहीं अच्छा लगता तो मेरी गाय के साथ बैठ कर खाइये ।

क्यों बेटा वहू को कुछ हुआ तो नहीं !
हां भैया जो होना था सो हो गया । मेरा फर्श टूट गया !

प्रियतम, मुझे एक बात बताओ कहीं चिल्ली नाम का कोई रिश्तेदार तो नहीं है तुम्हारा ?

माता जी ऐ मोटर ते वड्डी
चीज है आज मैंने ये
दे मारा ।
वकरा
कोशिश

पलट

नहीं, नहीं ! बहू इसका दूध मैंने नहीं खाया । यह झूठ बोल रहा है क्योंकि मैंने इसे लालीपॉप नहीं ले के दिया ।

मेरे ऐसे कपड़े पहनने से तुम्हारी नाक नीची होती है तो मैं तुम्हारी नाक ही काट देती हूँ ।

मुझसे इसीलिए शादी की थी कि तुम्हारी गाड़ी हांकू ?

क्यों जी, तुम तो मुझे इस तरह कभी नहीं उठाते !

घर में पानी नहीं मिलता तो ठीक है तुम्हीं दाढ़ी गीली कर दो शेव तो कर लूंगा ।

फैण्टम
और कूला-कू
की जादूगरनी

कुला-कू के मौत के अजायबघर में एलरिच को मुक्के बाजी में एक पाठ दिया ।

कायर ! भागो मत, खड़े हो और लड़ो ।
© King Features Syndicate, Inc., 1976. World rights reserved.

ओह ! मुझसे नहीं देखा जायेगा । एलरिच अब उसको मार देगा ।
FALK BARRY 7/6
बहुत अच्छा ! अपना पूरा जोर लगा लो चैम्पियन ।

महारानी, नकाबपोश आदमी एलरिच के सामने नहीं टिक सकेगा क्या मैं गोली चलाऊँ ?
नहीं, ठहरो ।

नकाबपोश मूर्ख है । उसको तलवार नहीं फेंकनी चाहिये थी । मैंने एलरिच को एक गुलाम को हाथ से मारते देखा है ।
!
FALK BARRY 7/5

अब तुमने अपना मौका खो दिया ।
अब तुम खत्म हो गये……
चूक गया, दुबारा कोशिश करो ।
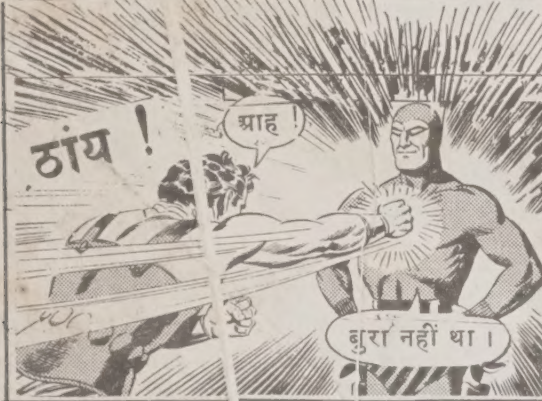
एलरिच एक जोर का मुक्का लगाता है ।
ठांय !
आह !
बुरा नहीं था ।

तुमको मारना तो ऐसे है जैसे दीवार को मारना, तुम आदमी हो या हैवान ? !
FALK BARRY 7/7

हैवान !

फैण्टम का लोहे का मुक्का एलरिच के जबाड़े पर पड़ता है
ठांय
मेरी बारी है ।
!

वह कटे पेड़ की तरह गिर जाता है ।

कुला-कू की महारानी ।
तुमने उसे हरा दिया, अब तलवार लेकर मार दो ।
!
FALK BARRY 7/8

भीम सैन सिंगल, कृष्ण नगर, अबोहर : जब पत्नी रूठ जाती है तो मयके चली जाती है, जब पति रूठता है तो कहां जाता है ?

उ० : क्या आप हमसे आफ़िस आने का समय पूछ रहे हैं ?

प्रवीन कुमार सिंह, आगरा : क्या आप मेरे बनाए कार्टून दीवाना में प्रकाशित करेंगे ?

उ० : प्रकाशित योग्य हुए तो अवश्य प्रकाशित करेंगे, प्रवीन जी. कार्टून अच्छे ड्राईंग कार्ड पर काली ड्राइँग इंक से बने होने चाहियें और उनका साईज होना चाहिये । 3"× 3"

मंजीत कुमार छाबड़ा, बेरमो : जानेवाले तो कभी नहीं आते, फिर उनकी याद क्यों आती है ?

उ० : क्योंकि जो चीज़ पास न हो वह बुराइयों के बावजूद अच्छी लगती है, पिंजरे का तोता चाहे कितना भी अच्छा हो, हम पेड़ के बैठे तोते फिर भी गिनते रहते हैं । याद आने के विषय में एक शायर ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं—

नहीं आती तो उनकी याद बरसों तक नहीं आती,
मगर जब याद आते हैं तो अकसर याद आते हैं ।

तसनीम अहमद खाँ 'बदायूनी' मुरादाबाद : यदि मास्टर जी विद्यार्थियों को नकल करने की पूरी छूट दे दें तो ?

उ० : तो उससे कोई अन्तर नहीं आएगा, नकल के लिए भी अकल चाहिये और जिसके पास अकल होती है वह नकल का आधीन नहीं होता ।

ललित मिश्रा, "मधुकर" सहरसा : संसार का सब से बड़ा आश्चर्य क्या है ?

उ० : चक्कर में डाल दिया है आपने ऐसा प्रश्न करके, क्योंकि हमें अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की आदत नहीं है ।

विश्व विजय, 'बैरागी' हेटौडा, नेपाल : ऐसी चीज़ का नाम बताएं जो हर जगह मिलती हो ।

उ० : ऐसी पत्रिका का नाम तो हम बता सकते हैं जो हर बुक्स्टाल पर मिलती हो ।

जिस शान से आता है, उस आने को क्या कहिये,
दीवाना है दीवाना दीवाने को क्या कहिये,

पपी, 'पतंगा' सुमन गोस्वामी, फ़ाजिलका : चाचा इस घड़ी आप क्या सोच रहे हैं ?

उ० : घड़ी के ही बारे में सोच रहे हैं My dear nephew, कि कभी-कभी कैसी उल्टी बात निकल जाती है मुंह से । अभी थोड़ी देर पहले हमने चिल्ली से समय पूछा था, 'देखना तुम्हारी बजी में क्या घड़ा है ?" इस पर चिल्ली ने चैक बुक हमारे हाथ में देते हुए कहा था, क्यों उल्टा बोल रहे हो चचा बातूनी, घड़ी में क्या बजा है यह तो मैं बाद में बताऊंगा, पहले तुम जल्दी से इस साईन पर चैक कर दो ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पवन कुमार—दिल्ली

प्र० : दुनिया का सबसे फास्ट बोलर तथा सर्वश्रेष्ठ विकेट कीपर कौन है ?

उ० : विकेट कीपर एलैन नॉट (इंग्लैंड) के बारे में मतभेद नहीं हैं। वे विश्व में सर्वश्रेष्ठ हैं। इस समय अधिकांश खेल समीक्षकों के मत में वेस्ट इंडीज का माइकेल होल्डिंग बौलिंग में चोटी पर हैं।

तसनीम 'बदायूंनी'—मुरादाबाद

प्र० : टेबल टेनिस की गेंद का वज़न क्या होता है ?

उ० : टेबल टेनिस की गेंद का वजन २.४० ग्राम व २.५३ ग्राम के बीच होता है।

सुरेश पेड़ीवाल—श्रीगंगानगर

प्र० : न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के साथ खेले जाने वाले टैस्ट मैच में 'आबिद अली' और 'सलीम दुर्रानी' के खेलने की क्या संभावना है।

उ० : अब दुर्रानी तथा आबिद के खेलने (टैस्टों में) की बात करना गड़े मुर्दे उखाड़ना जैसा है (फिर भी हमारी वर्तमान टीम को तथा नये प्रतिभावान खिलाड़ियों का अकाल देखते हुये कहने को जी करता है कि इनसे तो आबिद तथा दुर्रानी ही क्या बूढ़े विजय मर्चेन्ट भी खेलते तो अच्छा प्रदर्शन करते)।

नन्दलाल शर्मा सुजानगढ़

प्र० : भारत की ओर से किस क्रिकेट टैस्ट में सबसे ज्यादा रन बने हैं ? कितने और किसके विरुद्ध ?

उ० : एक पारी में भारत का सर्वाधिक स्कोर ५३६ नौ विकटों पर है (मद्रास में पाकिस्तान के विरुद्ध १९६०-६१)।

प्रतिपाल सिंह, सुरेन्द्र सिंह—गंजडुन्डवारा

प्र० : भारत की जो टीम पिछले दौरे पर न्यूजीलैंड तथा वेस्ट इंडीज में क्रिकेट खेलने गई थी। उसमें करसन घावरी को क्यों नहीं ले जाया गया था ?

उ० : यह तो सिलेक्टर्स ही बता सकते हैं। उनके काम सदा निराले ही होते हैं—

हरीशचन्द्र—सरोजनी नगर, दिल्ली

प्र० : भारत के किस बल्लेबाज ने एक ही वर्ष में सबसे ज्यादा स्कोर बनाया है।

उ० : एक वर्ष में भारत के सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज गावस्कर हैं। १९७६ वर्ष में उन्होंने १००० से अधिक टैस्ट रन बनाये।

सुशील कुमार जैन—गोहाना (सोनीपत)

प्र० : क्या भारत में अब तक 'बैडमिन्टन' का कोई अन्तर्राष्ट्रीय मैच हुआ है और यदि हां तो यह बताने का भी कष्ट करें कि अन्तिम मैच भारत में कब,कहां और किन-किन देशों के बीच हुआ था ?

उ० : जी हां,कई बार, हाल में ही हैदराबाद में एशियाई बैडमिन्टन प्रतियोगिता हुयी थी।

अशोक कुमार साहू—तेलहट्टा बाजार

प्र० : जवाहर लाल नेहरू हाकी टूर्नामेण्ट कब और कहां होने वाला है ?

उ० : इस वर्ष तो हो भी चुका। नेहरू हॉकी सदा दिल्ली में आयोजित होती है। यह टूर्नामेण्ट नवम्बर में होता है।

संजय,आनन्द कुमार जैन—बम्बई

प्र० : भारत में सबसे ज्यादा विकेट किसने लीं व कितनी ?

उ० : बिशन सिंह बेदी—वे ही प्रथम भारतीय बल्लेबाज हैं जो २०० विकेटों की संख्या तक पहुंचने में सफल हुये हैं।

ए० ए० जैन—बम्बई

प्र० : अभी तक भारत में कौन-सा खिलाड़ी सबसे अधिक देर तक पिच पर डटा रहा ?

उ० : पिच पर चिपके रहने में जयसिन्हा का जवाब नहीं था।

मनोहर 'गणेश' दाधिच—सुजानगढ़

प्र० : इस समय विश्व का सबसे अच्छा आलराउण्डर कौन है ?

उ० : इंग्लैंड के टोनी ग्रेग।

नवीन कुमार गुलाटी—मोती नगर

प्र० : क्या दिल्ली में या उसके आसपास कोई ऐसा क्लब है जो क्रिकेट और अन्य खेलों का प्रशिक्षण देता है ?"

उ० : दिल्ली ही क्या भारत में कोई क्रिकेट प्रशिक्षण स्कूल नहीं है। कभी कभी कोई पुराना क्रिकेटर प्रशिक्षण कैम्प लगाता है या स्पांसर होकर पटियाला खेल कूद संस्थान में जाया जा सकता है। भारत में इस समय स्कूल व कालिज हो एकमात्र प्रशिक्षण स्थान हैं।

शैलेन्द्र मोहन टण्डन—सहारनपुर-१

प्र० : मैं क्रिकेट की अच्छी-अच्छी किताबों के नाम पूछना चाहता हूं ! क्या आप बतायेंगे ?

उ० : हिन्दी में अब तक क्रिकेट अच्छी पुस्तकों का अभाव है क्योंकि भूतपूर्व क्रिकेटर व क्रिकेट विध अंग्रेजी में लिखते आ रहे हैं। अनुवाद उपलब्ध होने आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

प्र० : क्या यह पता लगना सम्भव कि भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों ने टैस्ट में १९३२ से अब तक कुल कितने बनाये हैं ! यानि कि अब तक भार क्रिकेट (सिर्फ टैस्ट)मैचों में कितने रन चुके हैं ?

उ० : असंभव तो कुछ भी नहीं है। समय खपाने की समस्या है—किसी लाइ अथवा भारत क्रिकेट कला के आ (बम्बई) में पॉकेट कैलकुलेटर लेकर बैठ होगा।

तसनीम 'बदायूंनी',—मुरादाबाद

प्र० : बैडमिन्टन खेलने के लिये भग कितनी लम्बाई-चौड़ाई होनी चाहिये

उ० : लम्बाई ४० फुट व चौड़ाई फुट।

प्र० : मुहम्मद अली की अगली बॉक्सि किसके साथ होगी ?

उ० : वैसे तो अली ने घोषणा की नार्टन को हराने के बाद (पिछले अब वह खेल से संन्यास ले रहे हैं परन्तु के समाचारों के अनुसार अपने निर्णय अडिग नहीं हैं। उनकी बांहें फड़कने हैं। अगर होगी तो उनकी भिडन्त फोरमैं होगी।

महेश कुमार फेरवानी—इन्दौर

प्र० : भारत के उस क्रिकेट खिल का नाम बतायें जिसने भारत और इं दोनों के लिए खेला है।

उ० : रण जी।

रमेश शर्मा—फरीदाबाद

प्र० : कृपा करके बतायें की बिशन बेदी ने टैस्ट स्तर में अब तक कितनी वि ली हैं !

उ० : मद्रास टैस्ट में टोनी ग्रेग विकेट उनकी दो सौवीं थी फिलहाल भा के वही एकमात्र गेंदबाज हैं जिसने २ के मील के पत्थर को पार किया है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश
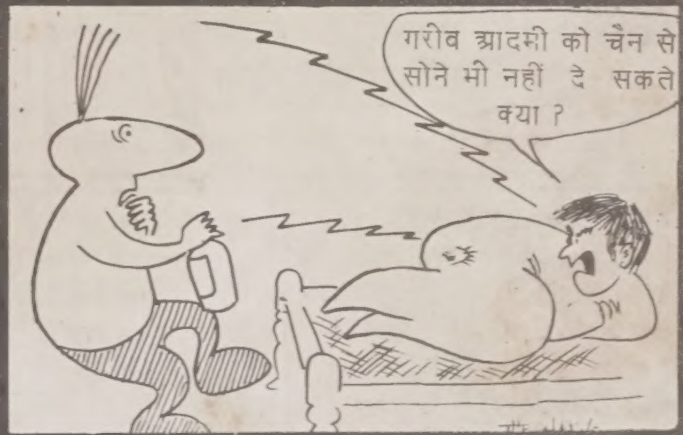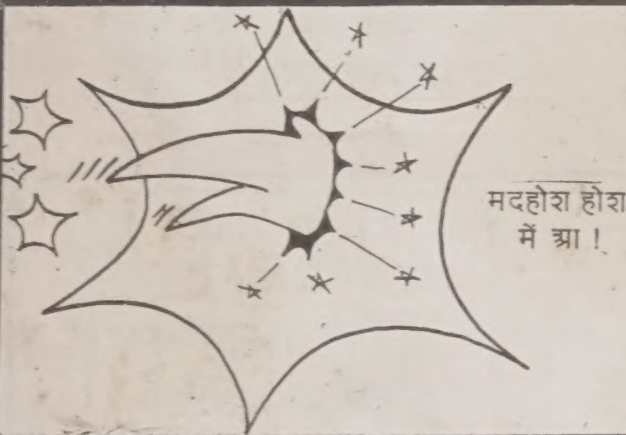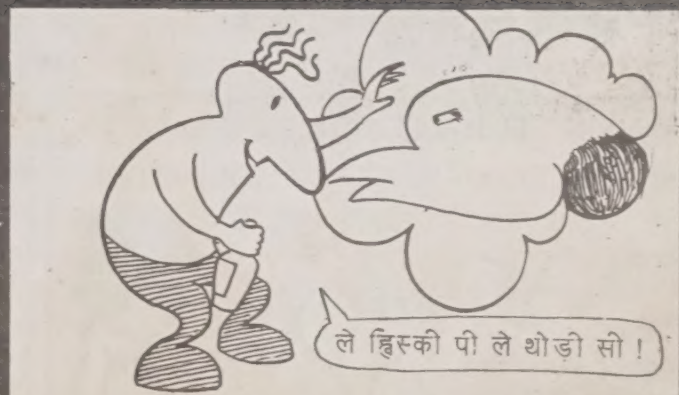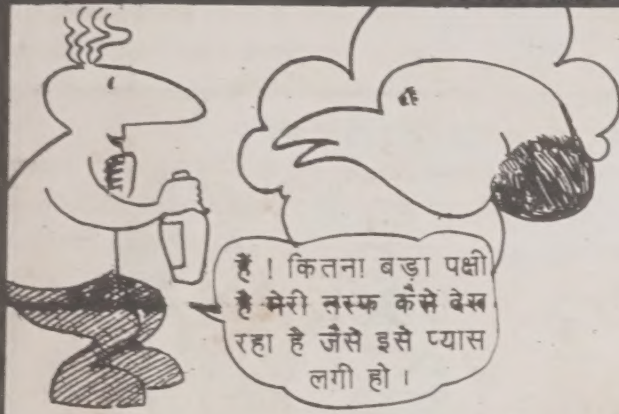
● मित्र—"कहिए मिस्टर, आपका लोहे वाला बक्स खुला जिसकी चाबी खो गई थी और जिसके खोलने में आप दिन भर परेशान थे ?"

मिस्टर—"हाँ, भाई, बड़ी तरकीब से उसे खुलवाया।"

मित्र—"क्या लुहार बुलाया था ?"

मिस्टर—"नहीं जी। जब सब तरह से हार गया, तब मैंने कह दिया कि इसमें मेरी पूर्व प्रेमिका के पत्र रखे हुए हैं। इतना सुनते ही न जाने कहां से मेरी पत्नी में इतनी ताकत आ गई कि एक ही झटके में उसे खोल दिया।"

● एक स्त्री—जब मैं २६ वर्ष की थी तभी से मैंने अपनी अवस्था किसी को नहीं बताई है।

दूसरी स्त्री—कभी न कभी तो बतानी पड़ेगी ही।

पहली—(बुरा मानकर) वाह, जब मैं इस बात को १५ वर्ष तक गुप्त रख सकती हूं तो जीवन भर इसको गुप्त रखना क्या कठिन है ?

● पहले ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड को रचा

चना कुरमुरा.

और आराम किया। तब ब्रह्मा ने पुरुष को रचा और फिर आराम किया। तब ब्रह्मा ने स्त्री को रचा और उस दिन से न ब्रह्मा को चैन मिला, न पुरुष को। —टॉलस्टाय

● मैनेजर—देखो मिस माला ! तुम अपना समय बनाव श्रृंगार में बरबाद करती रहती हो। ऐसे कैसे काम चलेगा। दफ्तर को नई टाईपिस्ट ढूंढ़नी पड़ेगी।

मिस माला—आप कैसे कहते हैं कि मैंने समय बर्बाद किया ? यहाँ आए मुझे केवल पाँच माह बीते हैं और मेरी सगाई फर्म के भागीदार से हो गई है।

● एक स्त्री एक बस के नीचे आ गई परन्तु उसे अधिक चोट नहीं लगी। मोटर वाली मोटर लेकर वहां से भाग गई। पुलिस ने कुचली जाने वाली स्त्री से पूछा, "क्या तुमने मोटर का नम्बर देखा था ?"

उस स्त्री ने कहा, "मुझे नम्बर देखने का समय ही नहीं मिला। मोटर आँधी की तरह निकल गई। हाँ, मोटर चलाने वाली स्त्री ने नीली साड़ी, सफेद ब्लाऊज, और कानों में बालियां पहनी हुई थीं। उसके माथे पर बिंदी थी, देखने में सुन्दर लगती थी—आयु लगभग तीस वर्ष होगी।"

● एक स्त्री एक ऐतिहासिक स्थान को देखने गई। टूटे हुए एक मीनार के पास खड़ी होकर वह फोटो खिंचवाने लगी। अचानक उसे ख्याल आया और वह फोटोग्राफर की ओर देखकर चिल्ला उठी, "फोटो में मेरी मोटर न आए, नहीं तो मेरा पति समझेगा कि मैंने ही इस मीनार को टक्कर मार कर गिराया है।"

● एक ईसाई महिला ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात श्मशान में एक शिला लगवाने का आर्डर दिया, जिस पर उसने निम्न शब्द लिखवाए—

"मेरा दुःख इतना अधिक है कि मैं उसे सहन नहीं कर सकती।"

आर्डर देने के कुछ दिन पश्चात ही उसने विवाह कर लिया, और शिलालेख लिखने वालों से कहा कि वह स्मारक वाक्यों में 'उसे' शब्द के बाद 'अकेले' शब्द और बढ़ा दें।

●

चरणदास

इस तोते की कीमत सौ रूपये इसलिये है क्योंकि आप इससे कोई भी प्रश्न कीजिये तो यह फौरन उसका जवाब देगा
बिका हुआ पक्षी वापिस नहीं होगा
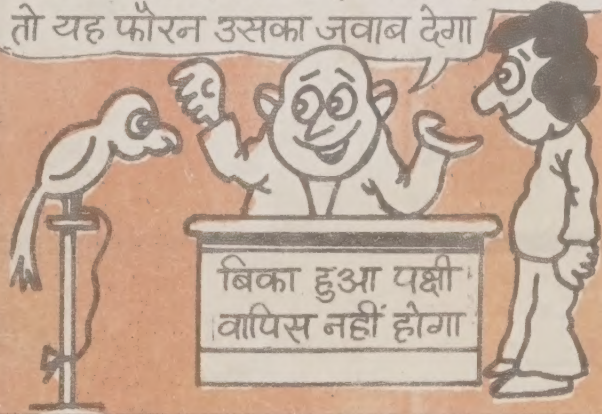
क्यों भई तोते तुम बोल लेते हो ?
जी हां, इसमें क्या शक है ?
बिका हुआ पक्षी वापिस नहीं होगा

चरणदास तोता खरीद कर अपने घर की ओर चल देता है

घर पहुंच कर
मिट्ठू क्या खाओगे ?
जी हां, इसमें क्या शक है ?

अच्छा बोलो - नमस्ते आइये बैठिये।
जी हां, इसमें क्या शक है ?

उस तोते बेचने वाले ने मुझे ठग लिया। इसको तो बस एक ही बात बोलनी आती है।
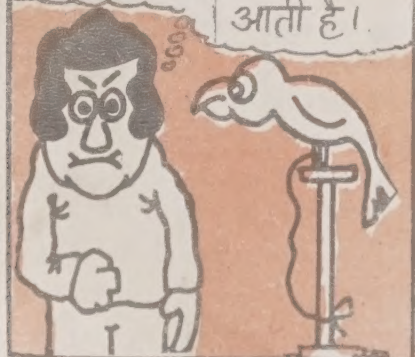
मैं बेवकूफ था जो तुम्हें सौ रुपये में खरीदा।

जी हां, इसमें क्या शक है ?

स्वीडन की लघु कथा

एक समय की बात है कि एक रानी थी, जिसको केवल यही दुख था कि उसके कोई सन्तान नहीं थी। एक दिन एक बुढ़िया उसके पास आई और उसने उसे बताया कि यदि उसे सन्तान चाहिये तो वह अपने महल में कमरा बन्द करके नल के बहते पानी में तीन बार नहाये। नहाते समय उसे दो लाल रंग के बड़े-बड़े प्याज मिलेंगे। दोनों प्याजों पर से सात-सात छिलके उतार कर वह उन्हें खा ले। कुछ समय बाद उसे दो सुन्दर पुत्र प्राप्त होंगे।

रानी ने वैसा ही किया जैसा उसे बुढ़िया द्वारा बताया गया था। नहाते समय जब उसे दो लाल प्याज मिले तो उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। वह इस खुशी में पहला प्याज बिना छीले ही खा गई। परन्तु दूसरा प्याज खाने से पूर्व ही उसे यह याद आ गया कि उसे प्याज के सात छिलके उतार कर प्याज खाना था। तब उसने ऐसा ही किया।

कुछ समय बीतने पर उसे सन्तान प्राप्त हुई, परन्तु उसे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उसने एक बहुत भयानक सर्प को जन्म दिया है। घबराहट में उसने उसे [illegible] की खिड़की से बाहर जंगल में फेंक दिया।

समय बीतने पर बुढ़िया के कहे अनुसार रानी को एक बहुत ही सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। जब वह राजकुमार बीस वर्ष का हो गया तब वह अपने लिये एक पत्नी की तलाश में निकला। जैसे ही वह शहर से बाहर चौराहे पर पहुंचा तो उसे अपना अत्यन्त डरावना भाई, सर्प राजकुमार मिला, जो उसका रास्ता रोक कर बैठ गया। उस सर्प ने राजकुमार से कहा कि मैं जानता हूं तुम अपने लिए पत्नी ढूंढ़ने जा रहे हो। पर ऐसा तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक मुझे मेरे योग्य पत्नी प्राप्त नहीं होगी। यह सुनकर राजकुमार महल वापिस लौट गया।

अगले दिन सुबह तक दूसरी दिशा में पत्नी की खोज में निकला। परन्तु पहले ही चौराहे पर फिर वही सर्प मिला। इस बार उसने अपनी शर्त फिर दोहराई।

तीसरे दिन राजकुमार भेष बदल कर फिर से तीसरी दिशा में चल पड़ा। अभी वह कुछ दूर ही निकला था कि उसे वही सर्प रास्ता रोके मिला। विवश होकर राजकुमार उस सर्प को अपने महल में ले आया और उसने राजा को सारा किस्सा सुनाया।

राजा ने बड़ी आसानी से उस सर्प से विवाह के लिए एक गरीब लड़की ढूंढ़ ली परन्तु विवाह की पहली रात के पश्चात वह लड़की फूट-फूटकर रोती हुई मिली। सर्प ने कहा कि यह पत्नी मेरे योग्य नहीं है। इस प्रकार जब भी राजा उसके लिए कोई पत्नी ढूंढ़ता, तब ऐसा ही होता, यहां तक की कोई भी गरीब अथवा अत्यन्त दुखी लड़की उस भयानक सर्प से विवाह करने को तैयार नहीं होती थी।

महल के पास के जंगल में एक बहुत ही चालाक बुढ़िया रहती थी, जिसके एक बहुत सुन्दर सौतेली बेटी थी। बुढ़िया उससे इतनी नफरत करती थी कि वह अपनी सौतेली बेटी से अपना पीछा छुड़ाने के लिए उसका विवाह उस सर्प से करने के लिये राजी हो गयी। उसने राजा को कहला भेजा कि मेरी खूबसूरत सौतेली लड़की उस सर्प से विवाह करने की इच्छा रखती है।

राजा ने खुश होकर उस लड़की को बुलाने के लिए अपने आदमियों को भेजा। लड़की ने घबरा कर अपने घर में रहने की एक रात की मोहलत मांगी। उस रात वह लड़की चोरी से अपनी असली मां की कब्र पर पहुंची और फूट-फूटकर रोने लगी। तब वही होशियार औरत जिसने रानी को वरदान दिया था आई और उसने लड़की के कान में कुछ कहा जिसे सुन लड़की खुशी-खुशी उस सर्प से शादी करने को महल में चली गई।

उसने राजा से शर्त रखी कि शादी की रात को उनको जो कमरा दिया जाये उसमें सात जोड़े सफेद सूती कपड़ों के, तीन सख्त ब्रुश और आग पर उबलता हुआ सोडे का पानी भी रखा जाये।

शादी की रात को जब वह लड़की और सर्प कमरे में अकेले रह गये तब सर्प ने लड़की से अपने कपड़े उतारने को कहा। इस पर लड़की ने कहा कि पहले तुम अपने कपड़े उतारो। यह सुनकर सर्प ने अपनी पहली केंचुली उतार दी और लड़की ने भी अपनी पोशाक उतार दी। इस प्रकार पहले सर्प ने और फिर लड़की ने एक-एक करके अपनी सातों पोशाकें उतार दीं। तब लड़की ने सोड़े के पानी को लेकर ब्रुश से उस सर्प को रगड़ना शुरु किया। इस प्रकार जब वह तीनों ब्रुशों से सर्प को रगड़ चुकी तब उसके सामने एक निहायत खूबसूरत राजकुमार खड़ा था।

उसने लड़की के सामने झुककर कहा कि तुमने मुझे श्राप से मुक्त करके मुझ पर बहुत बड़ा एहसान कर दिया है। क्या अब भी तुम अपने वायदे के अनुसार सदैव मेरा साथ दोगी? लड़की ने खुशी से हां कर दी।

अगले दिन सुबह राजा और रानी ने देखा कि न वहां कोई सर्प था और न कोई रोती हुई लड़की। वह तो एक राजकुमार और एक राजकुमारी खड़े थे और वे दोनों बहुत खुश थे।

वहां तब वही होशियार औरत आई और उसने रानी को बताया क्योंकि वह लाल प्याज को छीलकर खाना भूल गई थी इसी कारण वह सर्प बन गया था। यह सर्प उसका अपना ही बड़ा लड़का है।

राजा की मृत्यु के बाद सर्प राजकुमार उस देश का राजा बना और उसने अपनी रानी के साथ खुशी से जीवन व्यतीत किया।

विख्यात अंग्रेज शिल्पकार अल्फ्रेड स्टीवंश (१८१७-१८७८) को पिल्लों का इतना शौक था कि वे ५० वर्ष तक हर समय अपने कोट की जेब में एक पिल्ला रखते रहे।

हिन्दी फिल्मों के

अंग्रेजी नाम अर्थ बताना हमारा काम

हिन्दी फिल्मों के नाम प्रायः अंग्रेजी में ही लिखे होते हैं। परन्तु स्पैलिंग रोमन शैली में की जाती हैं। हमने देखा कि स्पैलिंग अंग्रेजी शैली में रखने पर फिल्मों के नाम काफी हद तक अर्थ पूर्ण हो जाते हैं। फिल्मों पर प्रायः सटीक ही बैठती है। हम यहां कुछ उदाहरण दे रहे हैं।

संतान

Sun tan का अर्थ है धूप में सिकना। सन्तान जैसी पारिवारिक रोने धोने वाली फिल्में बना कर निर्माता दर्शकों की भावनाओं का लाभ उठा कर खूब पैसा कमाते हैं और पैसा बटोरने पर गोवा जाकर धूप सेंकते रहते हैं।

बाबी

BO-BEE

इस शब्द के अन्तिम BEE को लीजिये। BEE यानि शहद की मक्खी! यह मक्खी दर्शक रूपी फूल की जेब से पैसा रूपी पराग निकाल कर खूब सारा शहद बना गयी। शहद-शहद सारा राज कपूर चाट गया और खाली छत्ता (डिम्पल) राजेश खन्ना के आगे डाल दिया।

आनन्द

AN END

इस बार तो शायद अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। फिल्म का नायक आनन्द अन्त में मर जाता है। अंग्रेजी लिखाई में यही नाम An End अर्थात् एक अंत (एक मौत) हुआ कितना सटीक है!

अंग्रेजी में Nag बीवी द्वारा की गयी किचकिच अर्थ में आता है यानि नेग का मतलब है किचकिच करके किसी को तंग करना। Naggin वर्तमान क्रिया रूप में हुआ। इस फिलम में आठ-दस सितारे हैं। जहां स्टारों का इतना जमघट होगा वहां किच-किच के अलावा और क्या होगा ?

नागिन

NAGGIN'

कादम्बरी

COW DUMB RI

कादम्बरी एक चुपचाप दुख सहने वाली लड़की की कथा है। Cow अंग्रेजी भाषा में दूषित व्यंग्य रूप में नारी के लिये प्रयुक्त होता है। (जैसे हिन्दी में मुर्गी) Dumb Cow सब कुछ मौन सहने वाली लड़की हुआ। वही फिल्म का विषय भी है।

Be का अर्थ होना और Rag हुआ चीथड़ा। बैराग क्या है अब तक आपको पता लग ही गया होगा। दिलीप कुमार ने अपनी सारी पुरानी फिलमों से टुकड़े ले-ले कर उन्हें जोड़ कर नया चीथड़ा बनाया। चीथड़ों में आपने देखा होगा कई डिजाइन के कपड़ों की टलियां लगी होंगी।

बैराग

BE RAG

चरस

CHEERUS

चीयर अस. यानि हमें दाद दो। बेशक साहब दाद देनी ही पड़ेगी. रामानन्द सागर ने हिम्मत की। कितना पैसा बेचारे ने फूंका एक घटिया कहानी पर। नामी सितारे लिये, फॉरिन शूटिंग की। सब इस उम्मीद में कि जनता ऐसी बकवास को भी सिर माथे लगा लेगी। जनता की मूर्खता पर उन्हें जो अडिग विश्वास है उसकी दाद देनी ही पड़ेगी।

मन का मीत

MAN Ka MEAT

अब इसमें तो कुछ कहने के लिये नहीं रह गया। Man ka meet यानि आदमी का मीट। (निर्माता को मटन में कुछ खराबी नजर आयी ?)

गुरुदत्त का प्यासा

Pay ASSa

प्यासा एक बेकार कवि की कहानी थी। बेचारे को कहीं से पैसा वैसा नहीं मिलता था, भूखों मरता था। अंग्रेजी टाइटिल देखिये। मतलब निकलता है Pay Ass यानि गधे के कुछ पैसे दे दो।

शोले

SHOAL'E

शोल अंग्रेजी में मछलियों के झुण्ड को कहते हैं। एक-एक शोल में हजारों मछलियां होती हैं। आप दर्शकों को मछलियां समझ लीजिये (कहावत भी है कि मछली फंस गयी जाल में) और सिनेमा घरों को जाल। दर्शक ऐसे ही टूटे जैसे जाल में शोल के शोल घुस आये हों।

कभी-कभी

CABBIE CABBIE

कैबी का आधुनिक अर्थ टैक्सी वाला, है। बोलचाल में कैबी-कैबी का अर्थ हुआ टैक्सी ! टैक्सी !! आपने कभी कभी देखी है तो पता होगा ही कि फिल्म में बेमतलब की कितनी भाग-दौड़ है। हर पात्र कहीं जाने के लिये हर दृश्य में टैक्सी ! टैक्सी !! पुकारता सा लगता है।

हें नहीं दी जाएगी, तुमने दुःसाहस किया है इसलिए तुम्हें विभिन्न षधियों का सेवन कराकर कोढ़ी बनाया जाएगा। अगर तुम सफल हुए तो हम राजकुमारी का विवाह तो तुम्हारे साथ करेंगे ही साथ ही राजपाट भी तुम्हीं को सौंपकर सन्यास आश्रम ग्रहण करेंगे।'

'मुझे आपकी दण्ड व्यवस्था तथा पुरस्कार की व्यवस्था मंजूर है।'

राजा ने कहा—'तो हम प्रबन्ध किए देते हैं, तुम आज ही अभी सुनाना।'

गड़रिया अब जरा संभलकर और दृढ़ स्वर में बोला—'महाराज, आज से ठीक आठ दिन बाद अपना दरबार बुलाइए तथा देश-देश से विद्वानों को भी बुला लें। हाँ, एक विनती मेरी ओर से भी है, उस दिन वे सभी कैदी जो कहानी सुनाकर राजकुमारी को थकाने में असमर्थ रहे हैं, उन्हें उस दिन रिहा कर दिया जाय और उन्हें भी दरबार में मेरी कहानी सुनने का अवसर प्रदान किया जाय।'

राजा को कुछ भरोसा-सा हो चला था। इसलिए उसने उसकी शर्त को सहज स्वीकार कर लिया।

ठीक आठ दिन बाद दरबार लगा। दरबार खचाखच भर गया था। कैद से छुटकारा पाने वाले कैदियों के चेहरों पर प्रफुल्लता, उल्लास तथा गड़रिए के प्रति कृतज्ञता स्पष्ट दिखाई दे रही थी। कुछ लोग गड़रिए की सफलता के लिए शंकित दिखाई दे रहे थे। वे उसके भविष्य की चिन्ता कर मन ही मन दुखी हो रहे थे।

खैर, धीरे-धीरे दरबार में तिल धरने की भी जगह न रही। थोड़ी देर बाद राजा और राजकुमारी भी उपस्थित हो गए और यथास्थान अपने आसन ग्रहण कर लिए।

गड़रिए को सिपाहियों के पहरे में उपस्थित किया गया, राज पंडित ने कहा—'महाराज, यदि आप एक मंडप भी तैयार करा दें तो उचित होगा। क्योंकि जैसे ही राजकुमारी को यह लड़का कहानी सुनाकर थका देगा त्यों ही राजकुमारी का विवाह इससे कर दिया जाय... क्योंकि आज देश-विदेश के राजा-महाराजा, सेनापति, विद्वान आदि इस कौतुक को देखने के लिए उपस्थित हुए हैं, अन्य किसी अवसर पर इतने व्यक्तियों को जुटा पाना कठिन तो है ही साथ ही आर्थिक रूप से व्ययसाध्य भी है।'

राजा ने भी कहा—'जैसी आपकी इच्छा।'

लड़का अपनी जगह से उठा और सभा भवन के बीच में खड़ा हो गया। उसने राजकुमारी को वहीं अपने पास खड़ी होने के लिए कहा, राजकुमारी ने ऐसा ही किया। तभी गड़रिए ने कहा—'राजकुमारी जी, मैं जब कहानी सुनाऊंगा तो आपको 'हुंकारा' देना होगा।'

राजकुमारी ने सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया।

गड़रिए ने आगे कहा—'अच्छा, सबसे पहले अपना मुख इन दर्शकों को दिखाओ जिनमें वे कैदी भी हैं जो तुम्हारे रूप-सौन्दर्य की चर्चाएं सुनकर तुम्हारे स्वयंवर में आए और हारकर कैद में सड़ रहे थे। इसके बाद तुम्हें कोई न देख सकेगा, क्योंकि तुम मेरी पत्नी बन जाओगी।'

राजकुमारी ने अपना चेहरा थोड़ी देर के लिए दिखाया और फिर ढक लिया।

गड़रिए ने फिर कहा—'राजकुमारी जी, 'हुंकारा' देना है।'

'तो सुनिए राजकुमारी जी, एक दिन मैं अपनी गाएँ, भैंसें, बकरियों को लेकर जंगल में चराने के लिए गया।'

'हूं, फिर।'

'चलते-चलते मैं जंगल के बीचों-बीच पहुंच गया।'

'हूं, फिर ?'

'गर्मी के दिन थे। इसलिए मेरे सभी जानवर पेड़ों की छांव में जाकर बैठ गए। मैं भी एक इमली के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया, अपनी रोटी खाई और पानी पीकर लेट गया।'

'हूं, फिर !'

'हवा चल रही थी, सो मुझे झपकी आ गयी।'

'अच्छा फिर।'

'अचानक मेरी आंख खुली तो क्या देखता हूं कि असंख्य छोटी-छोटी चिड़ियों का झुण्ड का झुण्ड उड़ता हुआ आ रहा है और मेरे देखते-देखते वो झुण्ड उसी इमली के पेड़ में समा गया। एकदम चीं-चीं की भयंकर आवाज से मेरे कानों के पर्दे फटने लगे।'

'हूं, फिर।'

'मैंने देखा, इमली के प्रत्येक पत्ते पर एक चिड़िया बैठी थी।'

'हूं, फिर।'

'थोड़ी देर बाद एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

'फिर।'

'फिर एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

फिर।'

'फिर एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

राजकुमारी 'फिर-फिर' कहती जाती, गड़रिया 'एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई' कहता जाता।

अब राजकुमारी कुछ परेशान सी दिखाई देने लगी। तभी गड़रिए ने कुछ रहस्यमय वातावरण तैयार करते हुए कहा—'हवा बहुत ज़ोरों से चलने लगी, सांय-सांय की आवाज बड़ी तेजी से आ रही थी। अब जंगल की हवा तुम जानो, मेरे रोंगटे खड़े हो गए।'

'फिर !'

'फिर एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

'फिर।'

'फिर एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई !'

राजकुमारी पूछती जाती और गड़रिया एक ही उत्तर देता जाता, राजकुमारी निराशाक्त स्वर में बोली-'गड़रिए तुम्हारी कहानी आगे नहीं बढ़ रही। कुछ समझ में नहीं आता।'

गड़रिए ने कहा—'राजकुमारी जी, तुम पूछती रहो, मैं आगे की कहानी सुनाता रहूंगा और जब थक जाओ तब बता देना।'

राजकुमारी ने कहा—'अच्छा तो फिर ?'

'फिर एक चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

यही क्रम काफी देर तक चलता रहा। राजकुमारी से अब रहा नहीं गया, उसने पूछा—'गड़रिए, तुम्हारी कहानी आगे कब बढ़ेगी ?'

'जब तक इमली के पेड़ से सभी चिड़ियां एक-एक कर फुर्र से नहीं उड़ेंगी।'

'फिर ?'

'सभी चिड़ियों को इस प्रकार उड़ने में साढ़े तीन साल का समय लगेगा। आप पूछती रहिए, मैं 'फुर्र से एक चिड़िया उड़ गई' कहता रहूंगा !'

गड़रिए की बात सुनकर राजकुमारी ने अपने कानों पर हाथ रखकर चीखते हुये अपने पिता की ओर देखते हुए कहा—'पिताजी, मैं यह कहानी सुनते-सुनते थक गई हूं। साढ़े तीन साल तक तो मैं मर ही जाऊंगी।'

सारे दरबार में इसके साथ ही तालियों की गड़गड़ाहट तथा वाह-वाह की गूंज, गूंज गई। चारों ओर से गड़रिए को बधाईयाँ मिलने लगीं। राजा ने भी अपने वचन का पालन किया। पहले से ही तैयार मंडप में राजकुमारी और गड़रिए युवक का विवाह हो गया। जब राजा को यह पता लगा कि वास्तव में गड़रिया, गड़रिया न होकर पड़ोसी मित्र राज्य का राजकुमार है तो उसे बहुत प्रसन्नता हुई तथा उसने उसको अपना समस्त राजपाट सौंपकर सन्यास जीवन बीताने के लिए वन की ओर प्रस्थान किया। राजा-रानी सुख से रहने लगे।

इस वक्त भारत में तुम ही दोनों ऐसे आदमी हो जो देश का बेड़ा पार लगा सकते हो। देश को थमारे जैसे नेताओं की सखत जरूरत है।

थम दोनों को राजनीति में आना चाहिये और चुनाव लड़ कर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये।

लो भाई लोगों चुनाव लड़ने के लिये पहले हमको अपनी पार्टी बनानी है। पहला काम यह करो कि पार्टी के लिये कोई बढ़िया सा नाम सोच लो। ऐसा नाम जो सबको सुनने में अच्छा लगे। लोगों के मुँह में चढ़ जाये।
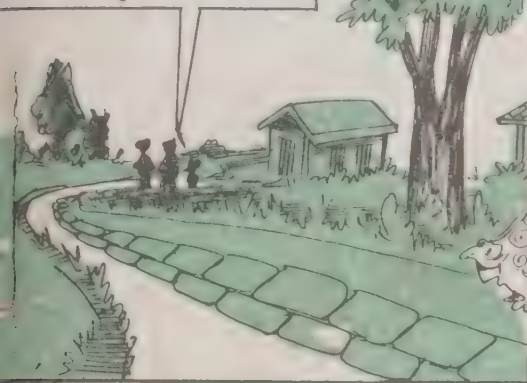
हम अपनी पार्टी का नाम दिलीप कुमार रखेंगे। काफी अच्छा नाम है।
नहीं दिलीप कुमार जरा पुराने फैशन का नाम है नया मॉड नाम चाहिये।
मिलखा सिंह? अमरीक सिंह? बलैती राम?
नहीं! टीटू, बिट्टू या डब्बू!
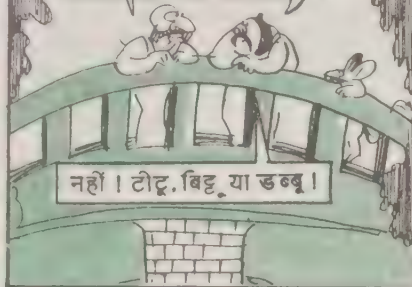
ऐसे नाम नहीं भाई, मतबल से भरा नाम होना चाहिये। जैसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस या समाजवाद पार्टी या जैसे जनता पार्टी!
भारत की जनता गरीब है। नाम पार्टी का ऐसा हो कि पता लगे तुम्हारी पार्टी गरीबी को खतम करने वाली है।
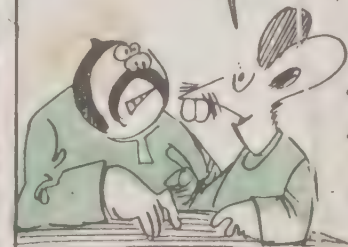
मेरे ख्याल मां 'आओ भाई आओ' कैशा रहेगा पार्टी का नाम? लोग नाम से प्रेरित होकर म्हारे पास आयेंगे।
लोग थमारे पास आयेंगे तो उनको चाय पानी पिलाने में थमारी पार्टी का सारा पैसा खरच हो जायेगा।
मुँह में पानी लाने वाला नाम?
कोई और बढ़िया सा नाम सोचो... मजेदार!

भारत की जनता गरीब, भूखी है उसे लुभाने वाला नाम!
अखिल भारत दूध-मलाई पार्टी म्हारी पार्टी का नाम बोलते हुए लोगों के मुँह में पानी आया करेगा।
दूध मलाई पार्टी! मुझे तो बड़ा अच्छा लग रिया है यह नाम।
यही ठीक रहेगा।
चलो यही पास कर दिया हमने?

जीतेगा भई जीतेगा दूध मलाई वाला जीतेगा
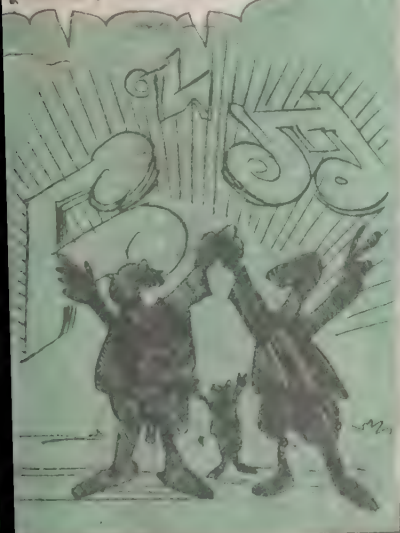
नाम तो बढ़िया मिल गिया हमको, तेरी अक्ल आज अच्छी काम कर रही है। लग रिया है कि फूफी ने गाम से जो देसी घी का कूंजा भेजा था उसकी तरावट तेरे भेजे मां पहुंचने लग गयी है।
इशी बात पर मेरी पीठ ठोंकी जानी चाहिये।

पिलपिल जोश में जरा जोर से ही पीठ ठोंकता है और सिलबिल के मुँह से सुबह खाया ब्रेकफास्ट बाहर आ जाता है।
THUMP
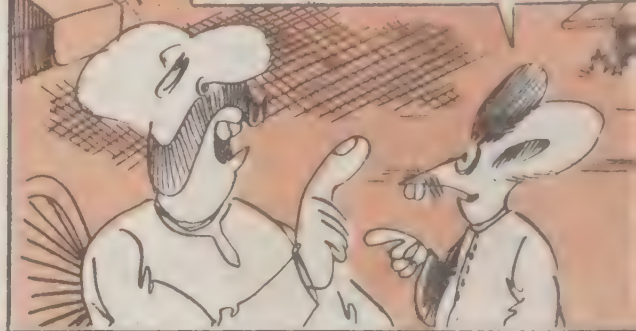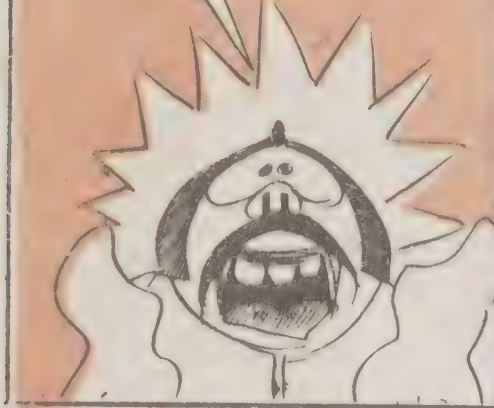
इब म्हारी पार्टी के चुनाव हो जाने चाहियें। पहले अच्छी-अच्छी पदवियां हम आपस में बांट लेते हैं।

आल इण्डिया
दूध मलाई पार्टी
हमारा नारा
काला अक्षर भैंस बराबर

हां, बाद में लाखों लोग म्हारी पार्टी में शामिल होंगे तो उस वक्त हमें जरा कठिनाई होगी।

चलो बांटो फिर देसी घी की रेवड़ियां।

पाठकों को सूचना

हमें पिलपिल और सिलबिल ने अब तक यह नहीं बताया कि वह किस नाम से चुनाव लड़ेंगे। दोनों ने गंगाजल की कसम खाकर इस रहस्य को गुप्त रखने का प्रण किया है। इसलिये आपके चुनाव क्षेत्र से किसी भी पार्टी की ओर से यदि कोई उम्मीदवार पिलपिल-सिलबिल से मिलता-जुलता नजर आये तो समझ लीजिये वही वास्तव में पिलपिल या सिलबिल है। आप अपना वोट तथा अपने दोस्तों व रिश्तेदारों के वोट उसे दिला कर अपना जन्म सफल बना सकते हैं। यह देश की महान सेवा होगी—दिल्ली

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

अर्थ अनर्थ

एक नजर में पढ़िये और दो-दो मजे लूटिये !

बलजिन्दर सिंह—दिल्ली

● सुरेश को भी गेंद खिलाओ वरना वह तुम्हें नहीं खेलने देगा ।
गेंद, छोलों से खिलायें या चाय के साथ ?
संजीव मैनी—जयपुर

● दिनों दिन वस्तुओं की कीमतें आसमान पर चढ़ रही हैं ।
सीढ़ी लगा कर या हवाई जहाज से ?
मधु प्रसाद—सिरसा

● ग्राहक दर्जी से, 'एक कमीज का क्या लोगे ?' दर्जी, 'आठ रुपये ।'
कपड़ा भी क्या दर्जी ही लगायेगा ?
सुरेन्द्र सिंह—पाहूजा, द्वारा हरबंससिंह, ३६६/२८, गुरु अंगद नगर, इन्डस्ट्रीयल एरिया, लुधियाना

● राजू ने मम्मी से कहा, 'मुझे अण्डा बना दो ।'
मम्मी क्या गोगिया पाशा की तरह जादूगर है ?

सर्वश्रेष्ठ वाक्य

● 'हम दोनों एक ही थाली में बैठकर खाना खायेंगे ।' एक मित्र बोला ।
क्या घर में कुर्सियों की कमी पड़ गई है ?

विकास मेहता—नई दिल्ली

● एक व्यक्ति दूसरे से बोला, 'सिर पर पैर रख कर दौड़ो ।'
क्या हाथों के सहारे भागना पड़ेगा ?

● 'कल तुम ताजमहल पर निबन्ध लिख कर लाना ।' मास्टर ने बच्चे से कहा ।
क्या ताजमहल उठा कर भी लाना पड़ेगा ?
मुरारी लाल—मदनगीर कैम्प

● 'मैं जरा डाकखाने जा रहा हूं तुम अकेले लंच कर लेना', एक मित्र दूसरे से बोला ।
क्या रोज-रोज रोटियां खाकर थक गए हो जो आज डाक खाने जा रहे हो ?
लीटू—रामपुर

● 'सुरेश को अच्छी तरह सील करके लिफाफा दो', एक व्यक्ति बोला ।
लिफाफे में क्या सुरेश को डालना है ?
मनोज कुमार जैन—एटा

● फलवाला, 'बाबूजी आपको चार रुपये किलो बेच दूंगा ।'
क्या कह रहा है भाई ? यह तो बता दे चार रुपये किलो क्या बेचेगा, फल या बाबूजी ?
इंकबाल अहमद—नैनीताल

● एक होटल पर बोर्ड लगा था, 'दो रुपये में एक थाली ।'
भोजन समेत या खाली ? यह तो लिख दिया होता ?
मनोज, हेमन्त कुमार शर्मा—दिल्ली

● 'मुझे इजाजत दीजिये, मुझे ट्रेन पकड़नी है', थानेदार अपने मित्र से जान छुड़ाता हुआ बोला ।
ट्रेन ने कौन सा गुनाह कर दिया है यह तो बता दो ?
अखौर समीर कुमार—केसरबाग

● 'रास्ता तो छोड़ दो भाई', एक साईकिल वाला भीड़ में बोला ।
क्या लोगों ने रास्ता पकड़ रखा था ?

● हर्ष वर्धन ७०७ ई० में गद्दी पर बैठा ।
इससे पहले क्या खड़ा रहा था ?

● मां ने बेटी से कहा, 'देख मैं अहमदाबाद से तेरे लिये लाख का कड़ा लाई हूं ।'
पूरे एक लाख का या कुछ ऊपर नीचे ...... ?
किरण कुमार—कामठी

● 'बेदी अब हिम्मत से खेल रहे हैं', रेडियो पर आवाज आई ।
क्या बैट लाना भूल गये हैं ?

● 'बेदी अब टर्नर को फेंकेंगे ।' उंसर ने कहा ।
कहाँ फेंकेंगे स्टेडियम से बाहर या......
प्रदीप कुमार शर्मा—कलकत्ता
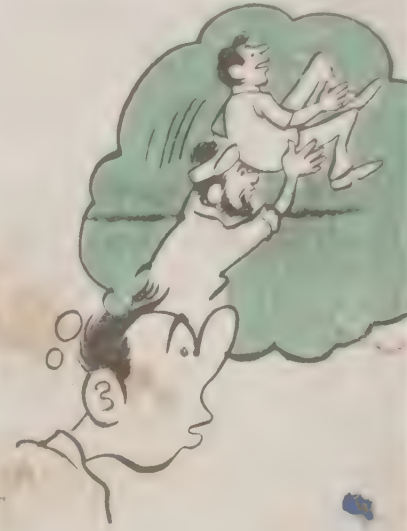
● राम, श्याम से बोला, 'इस ज... तो मेरा पैर ही काट खाया ।'
जूते भी आदम खोर बन गये हैं क्या ?
उमा शंकर—हरदा (म. प्र.)

● 'यहां पर चक्की का पिसा ... मिलता है' ...
गेंहूं का आटा कहां मिलेगा ?
अशोक मिश्रा—उदयपुर

● मां पिक्चर लग गई ।
कौन सी फिलम लगी है यह तो बता दे...
शाकिर अली सिद्दीकी—बरेली

● लो यह दो सोने की गोलिया... डाक्टर रोगी से बोला ।
डाक्टर भी जौहरी बन गये हैं क्या ?

आप भी इस प्रकार के वाक्य... कर हमें भेज सकते हैं । ... वाक्यों... दीवाना में पाठक के नाम सहित प्रका... किया जायेगा ।

अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड पर ही

केवल सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर ५ रु० का इनाम दिया जायेगा ।

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

दिल लूटने वाले जादूगर अब मैंने तुझे पहचाना है।
DEB ANANDA (HERO)

बन्द करो बकवास, वर्ना और लोग भी पहचान लेंगे।
DEB ANANDA (HERO)

वो खेत में मिलेगा खलिहान में मिलेगा।
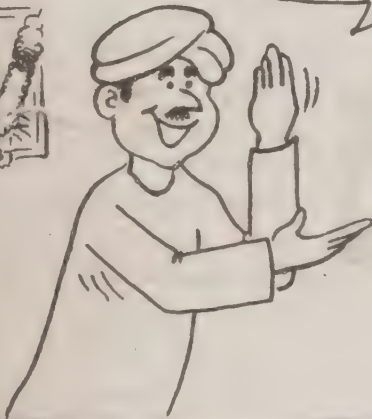
बन्द करो बकवास, वह कहीं भी मिले मुझे परवाह नहीं पर अगर मेरे रसोई घर में मिला तो मार-मार के टांगें तोड़ दूंगी।

दिल ढूंढ़ता है फिर वही फुरसत के रात दिन।

बन्द करो बकवास, जब फुरसत के दिन थे तब इतने बच्चे पैदा क्यों किये ?

जापान की विचित्र प्रथाएँ

प्राचीन परम्परा

जापान बड़ा विचित्र देश है। यद्यपि आज यूरोप तथा एशिया के अधिकांश देश आधुनिक सभ्यता के रंग में रंग गये हैं किन्तु यह अनोखा देश अब भी अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के मोह से मुक्त नहीं हुआ है।

आज भी जापानियों के मकानों की सजावट बड़ी विचित्र होती है। उनके घरों के अन्दर छतों में लालटेनें लटकती रहती हैं। जिनमें कांच के स्थान पर कागज लगे रहते हैं। ये लालटेनें बड़ी आकर्षक दिखाई देती हैं इनके घरों के द्वार पर पत्थर का बना चार-पांच फीट ऊंचा एक लैम्प रखा रहता है जो इनके मकानों की शोभा को और बढ़ा देता है।

साधारण जापानियों के घर पर्दों, कालीनों और सोफों से नहीं सजाये जाते। वहां कालीनों के स्थान पर बारीक बुनी हुई बड़ी-बड़ी चटाइयाँ बिछाई जाती हैं। दरवाजे तथा खिड़कियाँ खोले नहीं जाते, बल्कि सरकाये जाते हैं। उन पर शीशे के स्थान पर चावल का बना हुआ कागज लगाया जाता है।

बड़े शहरों में रहने वाले लोगों को छोड़कर सभी जापानी जमीन पर ही बैठते हैं और जमीन पर ही सोते हैं। उनके कमरों में शृंगार की एक नीची मेज, एक खाने की नीची-चौड़ी मेज, जो १५-१६ इंच ऊंची होती है और एक लिखने की मेज होती है। इन सब चीजों का प्रयोग जमीन पर रुई के गद्दों हर बैठकर किया जाता है।

घर के भीतर प्रायः चीड़ के पेड़ों के गमले शोभा पाते हैं। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि तीस वर्ष का एक पेड़ २ फीट से अधिक बड़ा नहीं होता। ये पेड़ कमरे के अन्दर बड़े सुहावने लगते हैं।

जापानी आज भी लकड़ी या मिट्टी के बर्तनों में भोजन करते हैं। इन बर्तनों पर ये एक चमकदार पालिश चढ़ाते हैं और उन पर बहुत सुन्दर बेल-बूटे काढ़ते हैं। इनका भोजन का समय प्रातः ११ बजे और शाम को ६ बजे होता है। भोजन के बीच चार बार हरी चाय पी जाती है। यह चाय बिना दूध और चीनी की होती है।

सत्य पर विचित्र

जापानियों में अतिथियों को चाय पिलाने की एक विशेष विधि है। यह चाय भी एक विशेष विधि से बनाई जाती है। कन्याएँ बचपन से ही इसे बनाने की शिक्षा ग्रहण करती हैं। चाय बनाते समय इसकी पत्तियाँ कुछ औषधियों के साथ पीसी जाती हैं।

जब अतिथि द्वार पर पहुंचता है तो वह अपने लकड़ी के जूतों को द्वार पर उतार देता
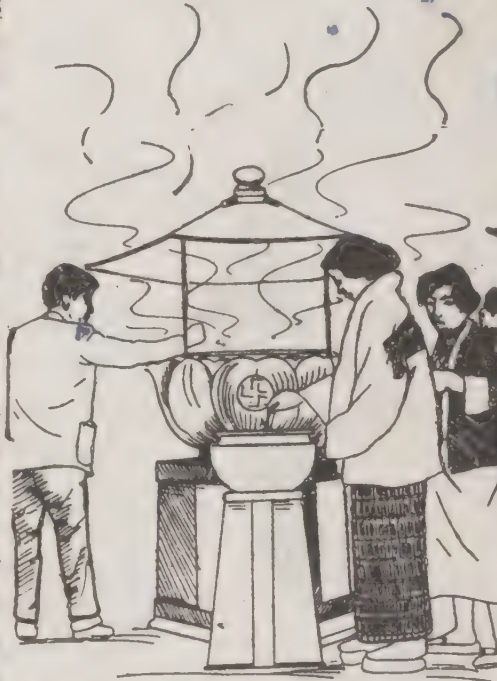
है और वहाँ सादे स्लीपर पहन लेता है। लकड़ी के जूते घर में नहीं, बाहर जाते समय पहने जाते हैं।

इसके बाद अतिथि को चाय वाले कमरे में लाया जाता है और वहाँ एक दीवार के पास गद्दे पर बैठा दिया जाता है। उसी कमरे में एक अंगीठी पर चाय पकाई जाती है। अतिथि के बैठ जाने पर लड़कियाँ हाथों में चाय लिये बड़े अन्दाज से कमरे में प्रवेश करती हैं। ये लड़कियाँ अंगीठी के पास घुटनों के बल पर बैठ जाती हैं और चाय बनाना शुरू करती हैं। चाय तैयार होने पर ये लड़कियाँ एक लकड़ी की तश्तरी में वहाँ की एक विशेष मिठाई लेकर अतिथि के पास आती हैं। वहाँ आकर वे अतिथि को प्रणाम क[...] है और अतिथि इसका उत्तर देता है। फि[...] लड़कियाँ अतिथि को एक सफेद कागज [...] हैं। यह कागज चावल से बनाया जाता [...]

घर की बड़ी उम्र की महिला अति[...] के सामने बैठकर चाय पीती है। पहले प्या[...] उठाया जाता है और फिर उसे चारों [...] घुमाकर उसकी सुन्दरता का आनन्द लि[...] जाता है। इसके बाद धीरे-धीरे शब्द क[...] हुए चाय पी जाती है। कड़वाहट को मि[...] के लिए बीच-बीच में मिठाई भी खाई ज[...] है। जो मिठाई बच जाती है उसे उस स[...] कागज में लपेटकर अतिथि को दे दि[...] जाता है।

जापानियों का एक और विशेष पे[...] जिसे वे चावल से बनाते हैं। इसे 'स[...] कहते हैं। यह एक छोटे प्याले में डाल[...] पिया जाता है। कुछ लड़कियाँ यह [...] अतिथि को प्याले में डालकर पिलाती हैं [...] वहाँ की प्रथा के अनुसार वह अतिथि भी [...] प्याले में वह पेय लड़कियों को पिलाता [...] लड़कियाँ पेय पीकर प्याले को पानी से ध[...] हैं और फिर उसमें अतिथि को पिलाती [...]

जापान में कठपुतली का खेल भी [...] विचित्र ढंग से किया जाता है। खेल दि[...] वाले सिर से पैर तक काले बुरके पहने [...] हैं। लेकिन कठपुतलियों के वस्त्र बड़े चम[...] और भड़कीले होते हैं। ये कठपुतलियां [...] भर में ही दर्शकों का मन मोह लेती हैं।

जापानी राजा के भी बड़े भक्त हो[...] कुछ ही वर्ष पूर्व तक वहां राजा को मा[...] नहीं, ईश्वर का अवतार माना जाता [...] वहाँ न तो कोई उसे छू सकता था और [...] ही उसकी ओर आंख उठाकर देख सकता [...] यहां तक कि दर्जी भी छूकर राजा का [...] नहीं ले सकता था। वहां लोगों में आज[...] राजा के प्रति बहुत विश्वास और भक्ति [...]

जापानियों की वीरता की कहानि[...] तो संसार-भर में प्रसिद्ध हैं। वे इतने भ[...] होते हैं कि तनिक सा भी अपमान नहीं [...] सकते।

एक समय जापान के एक मन्दिर [...] खम्भा गिर गया। जब वह न उठ सक[...] वहाँ की समस्त स्त्रियों ने मिलकर [...] लम्बे केश कटाये और उनकी एक र[...] बनाई। उससे यह खम्भा उठाकर अपने स[...] पर रख दिया गया। यह रस्सी अब भी [...] मन्दिर में रखी हुई है।

इस द्वारा छापी गयी सारी पुस्तकें पैंग्विन बुक्स के नाम से छापी जाती हैं

क्रिकेट कैसे खेलें

बैंककट

स्ट्रोक्स बहुत ही सधे हाथ से लगाना जरूरी होता है। अगला स्ट्रोक तो लाभदायक है पर इसके साथ साथ कम प्रयोग में लाया जाता है, इसका कारण यह है कि इसमें खतरा बहुत हैं तेज और मध्यम गेंद बाजों की गेंद पर इसको खेलना बहुत ही खतरनाक है। इसलिये बैंककट या जिस लेटकट कहते हैं, बहुत कम मात्रा में प्रयोग में लाया है। वैसे धीमी गेंद पर भी इसको खेलना कम खतरनाक नहीं हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि'यदि गेंद ब्रेक खाकर जरा भी चूक गयी तो वह स्टम्प्स से टकरा सकती है। इस प्रकार स्ट्रोक चूक गया तो यह अपनी मौत खुद बुलाना है। या अपनी कब्र खुद खोदना है। इसी कारण केवल सधे बल्लेवाज ही यदाकदा इसका प्रयोग करते हैं इस स्ट्रोक में दायें पैर को जिस तरफ से गेंद आ रही हो लगभग आधे फुट तक की दूरी तक बढ़ाना पड़ता है। फिर गेंद के पीछे की ओर होकर धीरे से पीछे की ओर ही काट देना होता है। इसमें गेंद की गति तेज हो जाती है, इस प्रकार के स्ट्रोक से रन बहुत अच्छे बनाये जा सकते हैं, पर खतरा बहुत है, इस प्रकार का स्ट्रोक बड़ा ही मजेदार होता है। इसके लिये बहुत अभ्यास की आवश्यकता है। यह स्ट्रोक खूब अभ्यास करने ही आ सकता है, साथ ही इस बात का भी ख्याल रखना चाहिये कि ऐसा स्ट्रोक यदाकदा ही लगाया जाये। हर बार इसका प्रयोग अपने आपको आऊट कर लेना है।

प्राय: वैंककट विकेट कीपर और वालर को चौका देने के किया जाता है, पर इसका लाभ एक दो बार ही उठाया जा स बार बार करने से जरा सी भी चूक से खुद स्टम्प्स हिला दे यह बात बिलकुल नहीं भूलना चाहिये।

लैग लांस

क्रिकेट में गेंद की बनावट भी अपनी महत्व रखती है। इसमें (सीम) होता है। इस वजह से आफसाइड पर रन बहुत ही व पाते हैं, इसलिये कुशल बल्लेवाज प्राय: लैग लांस स्ट्रोक काम मे करते हैं। इस प्रकार के स्ट्रोक में बांये पैर को उसी पैर के पी कर स्ट्रोक लगाना होता हैं। बल्ले का रुख लैग साइड की ओर जहां शाट मारना हो, उड़ा देना चाहिये। फाइनल लैग की ओ मारते समय बल्ले को काफी घुमाना होगा। जब कभी गेंद क पापिंग क्रीज से बहुत दूर पड़े तो हमेशा लैग लांस स्ट्रोक मारना जब कभी भी इस स्ट्रोक को उड़ाना हो तो दायें हाथ को थोड़ा सरका लेना चाहिए।

लैग लांस स्ट्रोक मार कर भी अच्छी खासी संख्या में रन जा सकते हैं। सौ रन बनाने के लिए अगर बल्लेवाज हरब का रुख देखकर देखकर बल्लेवाजी करे तो वह सरलता से सकता है। हर वार गेंद का रुख देख कर स्ट्रोक बदल बदलक का ढेर लगा जा सकता है।

बैटस्मैन को हर प्रकार की गेंद के मूड़ पर हर प्रक स्ट्रोक्स नहीं मारना चाहिए। जैसा गेंद का मूड हो उसी प्रका स्ट्रोक लगाना ठीक होता है।

हुक स्ट्रोक

आगे हुक स्ट्रोक है। हुक स्ट्रोक को बहुत से बल्लेवाज अपने में लाते हैं। वैसे हुक का मतलब खींचकर अलग करना होता क्रिकेट में गेंद को सहसा बल्ले से रोक देने को कहते हैं इस में गेंद को आफ स्टम्प्स से हुक किया जाता है। प्राय: बालर गेंद वाजी करने लगता है। धीमी गेंदवाजी के लिए तो अल स्ट्रोक है, जो आगे बतलाया जायेगा पर तेज गेंदवाजी में 'हुक' का प्रयोग होता है। ऐसी गेंदों को हठात् बल्ले से रोक देन स्ट्रोक कहलाता है। प्राय: गेंद जब तेजी से फेंकी जाये तो उ पिच से आधी से अधिक दूरी पर टप्पा खाये तब गेंद इस त जब बल्लेवाज के पास आयेगी तो वह उसकी छाती तक हो जायेगी, इस तरह की गेंद को हुक स्ट्रोक से रोका जा सकता अगर डिफेंसिव स्ट्रोक से गेंद को रोका गया तो गेंद, ऊँची ह कारण कैच आऊट का खतरा हैं। इसके साथ साथ शरीर में भी लग सकती हैं। अत एव ऐसे समय हुक स्ट्रोक से अपना किया जा सकता हैं।

इस प्रकार के स्ट्रोक में रन बनने की गुंजाइश बहुत कम हैं, पर आऊट होने से बचा जा सकता हैं।

पुल स्ट्रोक

हुक स्ट्रोक के ठीक विपरीत एक शाट 'पुलशाट' या 'स्ट्रोक' हैं पुल का मतलब रोककर अलग करना । हुक स्ट्रोक में खींचकर अलग करना से ठीक विपरीत । इस प्रकार का स्ट्रोक धीमी गेंदबाजी के समय काम में लाया जाता हैं, इस प्रकार का स्ट्रोक उस समय लगाना ठीक हैं जबकि गेंद शरीर की ओर या शरीर के दायीं ओर आ रही हो तो दाएं पैर से पीछे हट जाना चाहिए । बल्ले को सीधा करके स्क्वेयर कट के समान पैर को आगे लाकर गेंद को रोक लेना चाहिए, पुल स्ट्रोक में गेंद को स्क्वेयरकट के उल्टे मारा जाता हैं । स्क्वेयर कट में गेंद जिस ओर से आ रही हो बल्ले से उसका रास्ता काटना होता हैं । जबकि पुल स्ट्रोक में जिस ओर में गेंद आ रही हो हो, उसी ओर को हिटकर देना हैं । इस प्रकार के स्ट्रोक से अच्छे खासे रन बनाये जा सकते हैं ।

एक सावधानी आवश्यक हैं कि गेंद को उतना ही स्ट्राइक जाए कि वह वापस लौटकर लपक न ली जाए । प्रायः पुल स्ट्रोक के चक्कर से खिलाड़ी लपक लिया जाता हैं । अतएव इसका खूब अभ्यास कर लेना चाहिए ।

बल्लेवाजी हमेशा होशियारी से और बिना किसी हिचकिचाहट के करनी चाहिए । उत्तेजित होकर या मानसिक संतुलन छोड़कर बल्लेवाजी करना खतरनाक है । जितने ही इतमीनान से बल्लेवाजी की जायेगी, उतनी ही सफलता हाथ लगेगी । बल्लेबाज को हमेशा अपने सामने वाले साथी का ख्याल रखना चाहिए । उसके सहयोग के बिना रन बनाने में बाधा पड़ सकती है, सामने वाले साथी को संकेत ठीक ढंग से करना चाहिए । सामने वाले साथी का भी कर्त्तव्य है कि वह बराबर सतर्क रहे । सामने खड़े साथी को स्पष्ट संकेत करने से वह तुरन्त दौड़ पड़ेगा । सामने वाले साथी को भी कुछ बातें स्पष्ट रूप से, समझ लेनी चाहिएं । बल्लेबाज को एक से अधिक रन बनाने हैं तो उसे अपने साथी को दुबारा संकेत कर देना चाहिए । गेंद लैग या आफ की ओर जाये तो तुरन्त साथी को संकेत देकर भागना शुरू कर देना चाहिए । प्रायः सामने वाला साथी संकेत नहीं समझ पाता तो इसका नतीजा यह होता है कि खिलाड़ी आऊट हो जाता है । संकेत न समझ पाने के कारण क्रीज छोड़ देने से सब गड़बड़ हो जाया करता है ।

कुशल बल्लेवाज हमेशा इस बात का अनुमान लगा लेता है कि बालर किस प्रकार का है ? क्रिकेट के खेल में यही सबसे बड़ी विशेषता है । नौ क्षेत्ररक्षक (फील्डर) किस प्रकार कप्तान के इशारे पर खड़े होते हैं, उससे इस बात का सरलता से पता लग सकता है कि बालर किस प्रकार की गेंद खेलेगा ? क्षेत्ररक्षकों से ही सब पता चल जाता है । अतएव उसी ढंग से बैटस्मैन को बल्लेबाजी करने पर तैयार हो जाना चाहिए ।

विपक्षी दल का कप्तान हमेशा बालर के अनुसार फील्डिंग जमाता है । उसका उद्देश्य यह रहता है कि बल्लेबाज को अगर जल्दी आऊट नहीं किया जा सके, तो रन संख्या कम से कम हो । प्रायः बैटस्मैन फील्डिंग को न समझ पाने के कारण आऊट हो जाता है अथवा फील्डिंग देखकर उसके मन में इस बात का डर बना रहता है कि कहीं वह लपक न लिया जाए । इस डर के कारण वह सफलतापूर्वक बल्लेबाजी नहीं कर पाता है । सफलतापूर्वक बल्लेवाजी न करने से कम से कम रन बनते हैं । इस प्रकार रन संख्या में पिछड़ जाने से पार्टी को हार जाना पड़ता है । अधिक से अधिक रन बनाने वाला ही बल्लेबाज कुशल खिलाड़ी माना जाता है । हर बल्लेबाज बिना आऊट हुए खेलना चाहता है । एक बालर ज्यादा से ज्यादा 6-8 बार गेंद फेंक सकता है, जिसको ओवर कहा जाता है । एक ओवर के बाद ही दूसरा बालर आता है । हर बार नया बालर आने पर क्षेत्ररक्षकों की पोजीशन बदलती है । कप्तान इशारे से यह सब करा लेता है । बालर के आते ही क्षेत्ररक्षक को देखकर कुशल बल्लेबाज इस बात को समझ जाता है कि कैसी गेंद आएगी ! गेंद आने का अनुमान कर वह बैटिंग का रुख बदलकर खेल सकता है । गेंदबाज का ढंग पहले से ही पता लग सकता है ।

प्रायः बल्लेबाज क्षेत्ररक्षकों को अपने निकट देखकर घबरा जाता है । बिना आऊट हुए ही खेलने के चक्कर में वह बैटिंग इस प्रकार करता है कि रन नहीं बन पाते । खिलाड़ी रन बनाने की बजाय अपने को आऊट होने से बचाना चाहता है । इस चक्कर में रन ठंडे पड़ जाते हैं । फील्डर पास देखकर भी घबराना, हिचकिचाना नहीं चाहिए । इसमें रन बढ़ते हैं । जरा-सी सावधानी से काम लेकर बैट्समैन विपक्षी कप्तान को फील्ड रक्षण की व्यवस्था बदल देने पर मजबूर कर देता है ।

हर टीम का कप्तान मिट्टी का पुतला नहीं होता है और न ही खेल देखने वाला मूक दर्शक...वरन वह ध्यान से सब देखता है । प्रायः बैट्समैन के स्ट्रोक्स का ख्याल कर वह फील्डिंग बदलता रहता है ।

बल्लेबाज का हर स्ट्रोक वह गौर से देखता है । कुछ ही स्ट्रोक के बाद उसको पता चल जाता है कि बात क्या है । वह फील्डिंग के नक्शे में परिवर्तन करता चलता है । बैट्समैन को आऊट करने के लिए कप्तान अपने पैंतरे बदलता रहता है । हर स्ट्रोक के बाद बल्लेबाज को देखते रहना चाहिए कि फील्डिंग में क्या चेंज हो रहा है । इस ढंग से वह अपनी रक्षा करता हुआ अधिकतम रन बना सकता है ।

हर स्ट्रोक मारते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि किस तरफ गेंद आएगी और कौन फील्डर कहां है । हमेशा फील्डरों की असावधानी का भरपूर लाभ उठाना चाहिए । बल्ले की चोट खाकर गेंद जितनी ही फील्डरों से बेकाबू होगी, उतने ही अधिक रन बनेंगे ।

बल्लेबाज को रन बनाते समय हमेशा गेंद के प्रति सावधान रहना चाहिए । विकेटकीपर के पास तक गेंद पहुँच सके इससे पहले ही क्रीज में पैर रख देना चाहिए । खुद के स्ट्रोक से इस बात का पता लग सकता है कि गेंद कहाँ गई ? फील्डर जब तक गेंद पकड़े तब तक दौड़कर रन बनाना चाहिए । हर रन के बाद गेंद की पोजीशन पर ध्यान रख दौड़ मारना चाहिए । किसी फील्डर के हाथ गेंद लगते ही तुरन्त क्रीज में या वहीं रन खतम कर क्रीज में आ जाना चाहिए । फील्डर एक बार जब गेंद पकड़ लेता है, तो विकेटकीपर के पास आते देर नहीं लगती । विकेटकीपर गेंद पा गया और बैट्समैन क्रीज में पैर न रख सका तो वेल्स उठ जाएँगे और बल्लेबाज आऊट ।

बल्लेवाजी देखने में और खेलने में बड़ी आसान लगती है, पर बिना आऊट हुए 'रन' बनाने का अपना टैकनीक होता है । इसमें अत्यन्त कुशलता और सावधानी की आवश्यकता पड़ती है ।

क्रमशः

आपके पत्र

अंक नं० ४ की प्रतीक्षा ठीक २६ जनवरी को पूर्ण हुई जबकि मिसेज चिल्ली ने अपने "तिरंगे" रूपी होठों से दीवाना के प्रिय पाठकों का गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर स्वागत मुखपृष्ठ पर ही किया। इस अंक ने तब तो और भी आकर्षित किया जब "हम दीवाने गणतंत्र दिवस परेड में क्या देखना चाहते हैं" फीचर पढ़ने को मिला, पिछले कुछ दिनों से दीवाना में कुछ गड़बड़ी हुई है यानि कि "चाचा चौधरी", "मदहोश", "परोपकारी", "चचा बातूनी" आदि पढ़ने को नहीं मिल रहे हैं जिससे तनिक निराशा का आभास होने लगता है। फिर भी "चरणदास", "अर्थ अनर्थ", "क्यों और कैसे", "सत्य पर विचित्र", "पिलपिल सिलबिल" और "प्रतियोगिता" बरहाल पाठकों को काफी आकर्षित करने में, कामयाब सिद्ध हुई हैं। "मोटू-पतलू" ने तहलका ही मचा रखा है। मनोरंजन स्ट्रीट का इंतजार शेष है। कहानी छापने की संख्या कृपया कम करके रोचक पठनीय सामग्री प्रकाशित करने की कृपा करें !

टी० एस० साहनी-दिल्ली-७

गणतंत्र अंक पढ़ा। मुख-पृष्ठ देखते ही हँसी आ गई। इस अंक में सब कुछ ही अच्छा रहा। कृपया फैंटम अधिक पेजों पर दिया करें तथा यन्त्र मानव कथा बन्द कर दें, यह अब बहुत बोर करने लगा है। आप परोपकारी कभी देते हैं, कभी नहीं। कृपया परोपकारी हर अंक में दिया करें। अगले अंक की बहुत बेचैनी से प्रतीक्षा है ?

अनिल कुमार भटनागर—नई दिल्ली

सुबह-सुबह बुक स्टाल पर पहुंचा। 'दीवाना' का ताजा अंक देखकर मैं तुरंत ही 'दीवाना' खरीदकर घर ले आया। सिलबिल-पिलपिल का हाल पढ़ने में मजा आ गया। मोटू-पतलू ने बहुत मनोरंजन किया। 'शनि का शाप' कहानी बहुत अच्छी लगी। अगले अंक के इन्तजार में।

संजय कुमार गुप्ता —तपकरा

दीवाना का अंक चार प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्लन जी से भेंट हुई तो उनसे मालूम हुआ कि लिपस्टिक के गुण हजार हैं। इस अंक में खासकर 'चरणदास', 'सिलबिल-पिलपिल', 'फैण्टम', तथा 'जिनी और जॉनी' की पेरों बहुत-बहुत पसन्द आई। फिल्मी कलाकारों के चित्र तथा उन पर लेख आप हर दीवाना में दिया करें।

दीवाना की प्रगति के लिए धन्यवाद मैं ३-४ 'अर्थ-अनर्थ' भेज चुका हूं पर आप एक भी अभी तक नहीं छापा है। लगता है कि आपको निराश करने में मजा आता है

समीर कुमार—अखौरी—शेरघाटी

२० जनवरी सन् १९७० का अंक प्राप्त हुआ। सब मिलाकर अंक सराहनीय है 'सुखवंत' जी के लघु कार्टून बहुत ही अच्छे लगते हैं। कृपया 'रंग-भरो-प्रतियोगिता' हटा कर कोई नई प्रतियोगिता शुरू करें जो दीवाना के पाठकों को बोर न करे। २६ फरवरी १९७७ को मेरी शादी है। मैं दीवाना के सभी सदस्य तथा पाठक शादी का निमन्त्रण स्वीकार करें और वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए रात के १२ बजे पधारें।

राकेश कुमार 'बुआ'—दिल्ली-३

हमारे पाठकों की तथा हमारी ओर से आपको पत्नी मुबारक हो। —स

रंग भरो प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता दो भागों में विभाजित है। पहला भाग ८ साल की आयु से १४ साल की आयु तक, और दूसरा भाग १५ साल की आयु से ऊपर के सभी पाठक।

आप भी जल्दी रंग भर कर भेजिए, अपनी आयु व पता सही-सही लिखें। आप चाहें तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं। हर कूपन में अपना नाम, पता व आयु लिखना न भूलें।

दोनों भागों में पहला, दूसरा व तीसरा इनाम दिया जाता है।

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की।

अन्तिम तिथि ५ मार्च १९७७

नाम ____________________

पता ____________________

____________________ आयु ________

दिल्ली प्रोडक्शन्ज की नई रंगीन फ़िल्म में देखिये,

घसीटा राम का

डबल रोल

दुनिया की कोई ऐसी दवा नहीं जिस की बीमारी डाक्टर झटका के पास न हो। डाक्टर झटका ऐसी-ऐसी जड़ी बूटियों और विचित्र पदार्थों से अपनी दवा बनाते हैं जिन पर किसी वैज्ञानिक ने आज तक प्रयोग नहीं किया है। डाक्टर झटका को अपनी जिन चीज़ों पर सबसे अधिक गर्व है, वे हैं उनकी नाक, कान और आंखें और आंखें भी ऐसी जैसे संतरे की फांकें। इस पर अंधेर यह है कि उन्हें फूटी आंखों वाला जो कम्पौंडर मिला है, उसे न अंधेरे में कुछ दिखाई देता है न उजाले में। पिछले सप्ताह डा० झटका ने घसीटा राम की दुखती आंखों में लोकोला की जगह कोका कोला डाल कर उनके दिये गुल कर दिये थे और अपने जन्म दिन पर उन्हें जूता उबाल कर खिला दिया था। डा० अब घसीटा राम के लिए एक स्पेशल दवा तैयार कर रहे हैं। इनकी सहायता के लिए इनकी पुरानी नर्स सिस्टर मधुबाला भी आ गई हैं। और हमारे हास्य कलाकारों का पुराना मित्र उल्लू विदेश यात्रा से लौट आया है। इस उल्लू का नाम है चतुर शास्त्री। इसकी एक रग फ़ालतू है। यह आदमियों की तरह बोलता है, जरूरत से ज़्यादा अकलमन्द है और फ़िल्में देखने और फ़िल्मी गाने-गाने का शौकीन है।

पाच किलो दवा की खुराक बनी है, इसे नाक बन्द करके आराम से पी जाओ।
नाक क्या बन्द करनी है, सांस बन्द करने की बात करो, दवा नहीं पीयोगे तो आंसू पीने पड़ेंगे। हेमन्त कुमार का वह गाना नहीं सुना तुमने —'कल तेरी तस्वीर को सजदे किये हैं रात भर। हमने तेरी याद में आंसू पीये हैं रात भर।'

दवा पीने के तुरंत बाद ही घसीटाराम पर उसका असर होने लगा था
बीमारी निकली बाहर ?
कुछ तो निकलेगा ही, बीमारी नहीं निकलेगी तो जनाजा नकलेगा।

तकलीफ़ इसकी आंखों में थी और दवा तुमने इसके पेट में भर दी
पेट ही तो सब बीमारियों की जड़ है।

और सबसे गहरी जड़ वाली बीमारी का नाम है भूख। यह पेट ही से पैदा होती है।
विदेश यात्रा करने के बाद यह चतुर शास्त्री तो अर्थ शास्त्र की बातें करने लगा है।

मैंने ऐसी दवा पिलाई है कि अब गले से ऊपर इसके सर में कोई बीमारी पैदा नहीं होगी।
मान लिया, कोई बीमारी पैदा नहीं होगी। पर यहां तो एक और सर पैदा हो रहा है।
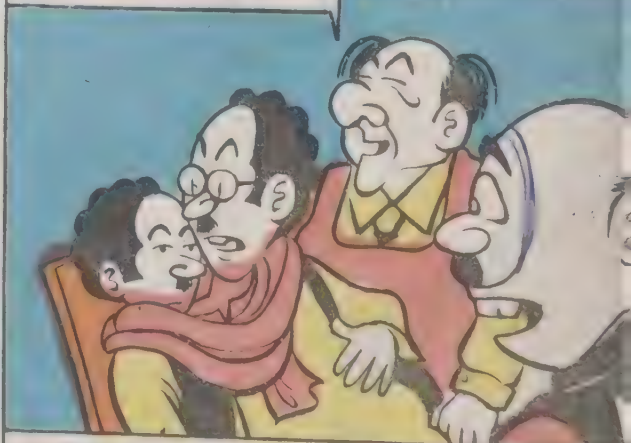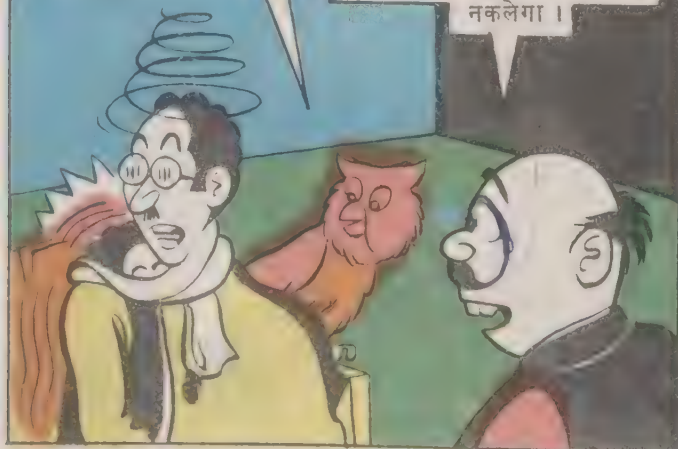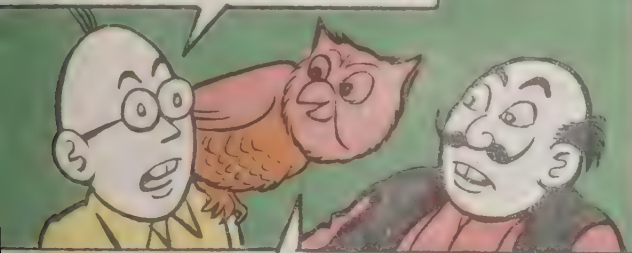
जैसी बातें कर रहे हो। हर आदमी में दो प्रकार के आदमी होते हैं। एक अच्छा आदमी होता है और एक बुरा आदमी होता है। इस मनोविज्ञान को सही सिद्ध करने के लिए डाक्टर झटका ने अपनी दवा से एक ही समय में दोनों आदमी बाहर निकाल दिए हैं। अब तक आपने घसीटा राम जी का बुरा रूप देखा है, अब बुरे के साथ-साथ ही अच्छा रूप भी देखिये।

मेरा ही दिमाग़ ख़राब था जो डाक्टर झटका के पल्ले पडा।
बीस साल से दिमाग़ ख़राब है, यह कोई नई बात तो नहीं है ।
डाक्टर झटका

पांच मिनट हुए हैं तुझे पैदा हुये और बीस साल पहले की बा
रहा है । मैं सर फोड़ दूंगा तेरा ।
दोनों हाथ तेरे नहीं है, एक हाथ मेरा भी है । मैं बेड़ बजा दूंगा तेरे सर का ।

क्या उल्लुओं जैसी बातें कर रहे हो ? लड़ाई झगड़ा करने की बजाए वह गाना गाओ ।
हम एक हैं हम एक हैं हम एक रहेंगे,
इक साथ जिये हैं यहां इक साथ मरेंगे ।
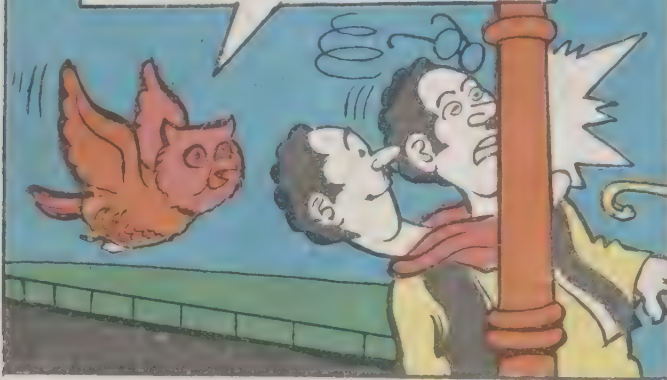
मरेगा यह बायें हाथ वाला, भला मैं क्यों मरने लगा ?
फिलमी गाने मैं गा रहा हूं और कलर बाई टैक्नीकलर फि
सितारे इसे नजर आ रहे है ।
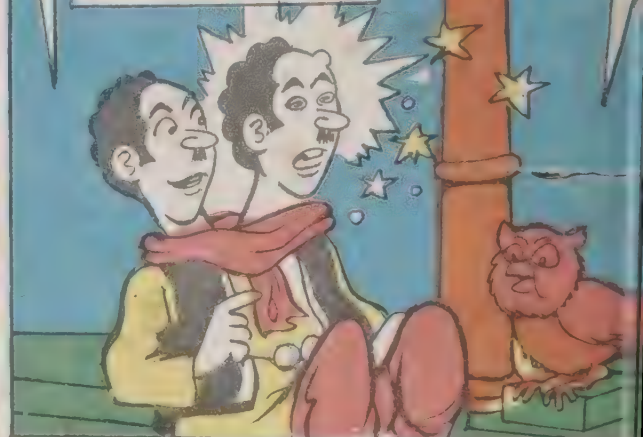
अरे देख कर चल, सामने गटर है । अपने साथ मुझे भी लेकर मरेगा क्या ?
जैसे गाईड फिलम में देवानन्द मरा था तो उसके साथ उसकें अच्छे और बुरे दोनों रूप मर गये थे ।

आज मैं अपना जन्म दिन बड़ी धूम-धाम से मनाऊंगा
हे भगवान, मेरे इस सर का सफाया कर दे, न रहे बांस और न बजे बंसी ।

यह जो तेरे हाथ में बांस है, इससे तो तू खुद ही बंसी बजा रहा है ।

'अरे, तेरी यह मजाल ! मेरा गला फंसा लिया अपनी छड़ी में ।
मैं ने नहीं फंसाया जी । इस बाएं हाथ वाले घसीटा राम ने फंसाया है ।
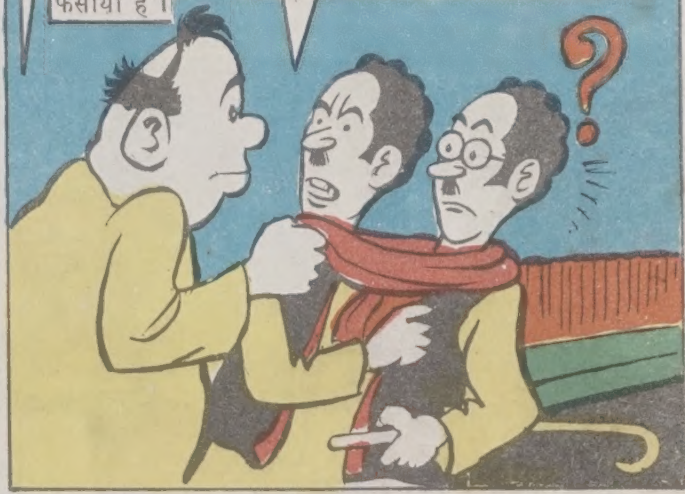
इसके सर की कसम, इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है ।
मेरा ही सर मिला है तुझे झूठी-सच्ची कसमें खाने के लिए,

एक मुक्का इसने खा लिया, एक अब तुम खा लो । और यह फैसला बाद में कर लेना कि कसूर किसका था ।

तुम्हारी नज़रों में कैसे रंगीन सितारे समाये हुए हैं । सुरइया का वह फिल्मी गाना सुनाऊं तुम्हें ।
वो पास रहें या दूर रहें नजरों में समाये रहते हैं,
इतना तो बता दे कोई हमें क्या प्यार इसी को कहते हैं ।

घसीटा राम जी अपने घर पहुंचे तो चेलाराम पहले से ही उनकी प्रतीक्षा कर रहा था ।
एक जिस्म पर दो सर, मेरी आंखों का बोलो ही राम हो गया है, या मैं कोई सपना देख रहा हूं ।

तुम जो देख रहे हो वह हकीकत है। डाक्टर झटका की दवा पी कर घसीटाराम जी का दूसरा रूप भी आ गया है।
मेरी जान को मुसीबत हो गई है चेला राम, आ एक बाजी शतरंज की खेलें ताकि सर का कुछ बोझ कम हो।
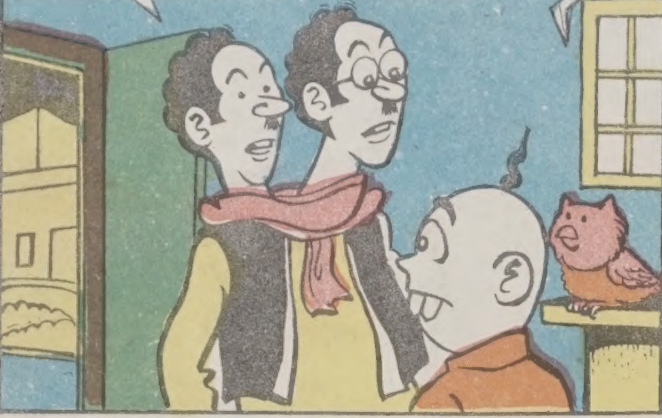
मैंने यह पैदल आगे बढ़ाया।
बे मौत मर जाएगा पैदल, घोड़े को ढाई घर आगे बढ़ा ओ
एक बार आराम से सोच कर चाल चलो।
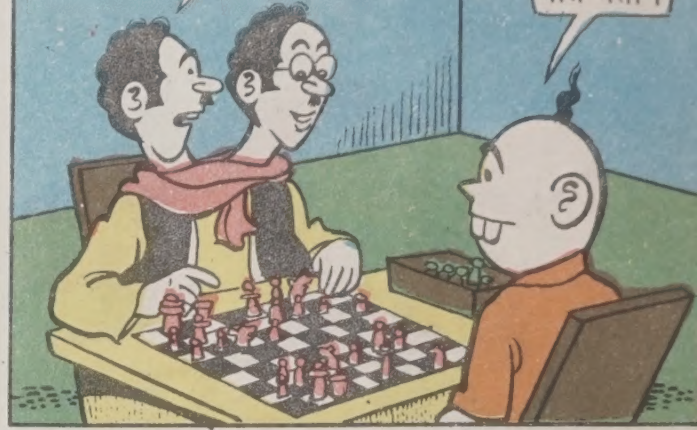
तुम क्यों बोले बीच में
चाल घसीटा राम की है ना?
हां चाल तुम्हारी है। घसीटा राम जी की है

फिर तो मैं यह पैदल चलूगा।
टांग तोड़ दूंगा मैं इस पैदल की तो यह कैसे चलेगा, मैं घोड़ा आगे बढ़ाऊगा।
मैं पैदल चलूंगा, मैं घसीटा राम हू।
मैं घोड़ा चलूंगा, मैं घसीटा राम हूं।

ले चल तू कैसे चलेगा पैदल?
ले रो ले तू भी अपने मरे हुए घोड़े को।

मरे हुए चेला राम को भी कोई रोने वाला नहीं।
अपनी हालत पर खुद ही आंसू बहा लो किशोर कुमार का यह गाना गा कर।
मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया, जो लिखा था आंसुओं के संग बह गया।

सर में दर्द कर दिया मैं एक कप चाय पियूंगा अब ।
मैं आइसक्रीम खाऊंगा और दीवाना पढ़ूंगा अपना कलेजा ठंडा करने के लिये ।
सब जानने वालों को बुलाकर लाऊं, यहां तो बहुत गड़बड़ है।

मेरी चाय के साथ आइसक्रीम खा कर भट्टा बिठाओगे मेरे पेट का
मेरी आइसक्रीम के साथ चाय पी कर आत्महत्या करोगे मेरी।
दीवाना

लो पढ़लो दीवाना आइसक्रीम खा कर।
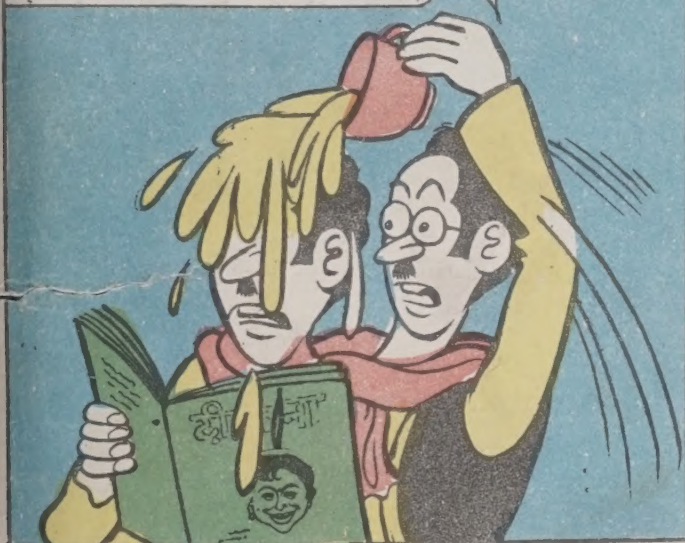
तुम पढ़लो दीवाना आइसक्रीम में नहा कर ।

मेरा टैलिफोन आया है ।
तुम्हें तो पैदा हुए दो घंटे भी नहीं हुये हैं । टैलिफोन मेरा आया है ।

हो गया ठंडा ! क्या बासी कढ़ी में आए उबाल की तरह उछल रहा था
हैलो हैलो! जी नहीं !! रांग नम्बर!!!
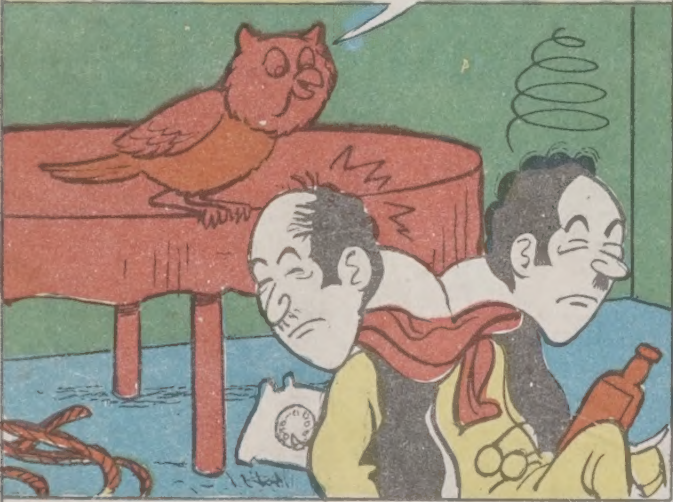
एक सर को जब थोड़ी देर बाद होश आया तो......

मेरे साथ चाल चल रहा है, मैं अभी खबर लूंगा इसकी।

इसी प्रकार घसीटा राम के दोनों सर बार-बार बेहोश होते और होश में आते रहे। चेला राम जब अपना सहायता दल लेकर पहुंचा तो वहां यह हालत थी।

असली मोटू पतलू और आप के अन्य प्रिय कलाकार केवल दीवाना में प्रकाशित होते हैं। दीवाना के आगामी अंक में इनके नये,मनोरंजक धमाके देखिये।